राम हाइकु पीयूष

प्रधान सम्पादक
ओमप्रकाश गुप्ता

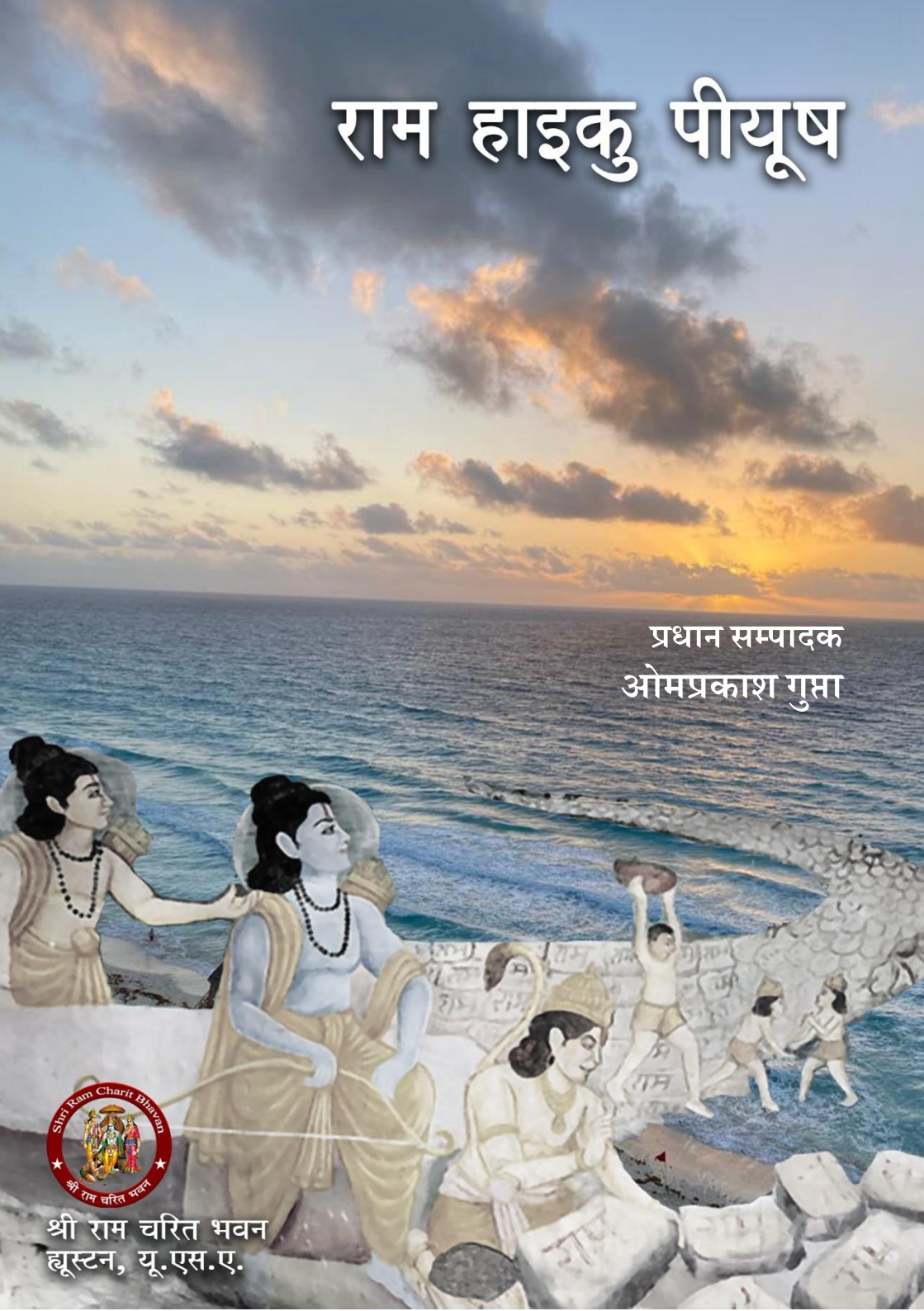

श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

राम हाइकु पीयूष

रथ हाइकु
बने हम सारथी
लक्ष्य श्रीराम!

सम्पादक मण्डल

अलका प्रमोद (भारत)
आभा खरे (भारत)
चित्रा गुप्ता (सिंगापुर)
मधु गोयल (भारत)
विनीता मिश्रा (भारत)
शैल अग्रवाल (यू.के.)

प्रबंध सम्पादक

शिवप्रकाश अग्रवाल (भारत)

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता (यू.एस.ए.)

प्रकाशक
श्री राम चरित भवन
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
Publisher
Shri Ram Charit Bhavan
Houston, USA

प्रथम संस्करण 2022
First Edition 2022

ISBN: 978-1-7362088-5-4

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल का विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल समीक्षक को अपनी समीक्षा में आंशिक उद्धरण देने की छूट है।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

आमुख

रामकथा पर केंद्रित विश्व का पहला हाइकु संकलन: राम हाइकु पीयूष

डा० जगदीश व्योम

'राम' शब्द यूँ तो दो अक्षरों का एक नाम है, परंतु दो अक्षरों के इस नाम की व्यापकता इतनी विराट है कि इसमें समूचा ब्रह्माण्ड ही समाहित है। 'राम' सर्वत्र हैं, वे जड़-चेतन सभी में व्याप्त है और सब राम में अंतर्निहित हैं। 'राम' देश-काल से परे हैं, वे हर युग में हैं, हर काल में हैं, राम निर्गुण भी हैं और सगुण रूप भी है, अर्थात् 'राम' किसी न किसी रूप में प्राय: हर धर्म में, हर देश में हैं, हर भाषा में हैं। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है- "जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी"।

लोक-जीवन में तो 'राम' वाल्मीकि रामायण के पहले से ही व्याप्त हैं, वे लोकनायक हैं इसलिए लोक में पहले से ही उनका अस्तित्व है। दुनिया की शायद ही कोई ऐसी भाषा शेष बची हो, जिसमें 'राम-कथा' पर कुछ न कुछ लिखा न गया हो। हिंदी भाषा और साहित्य में तो राम कथा की लोकप्रियता सर्वविदित है।

हिंदी काव्य की लगभग प्रत्येक विधा में रामकथा पर कुछ न कुछ अवश्य लिखा गया है। गीत, नवगीत, दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, गजल, रुबाई, घनाक्षरी, सवैया आदि... आदि एवं मुक्त-छंद, छंद मुक्त तथा अन्यान्य सभी विधाओं में राम कथा पर साहित्य उपलब्ध है। 'हाइकु' कविता में राम पर छुटपुट हाइकु तो लिखे जाते रहे हैं परंतु इस तरह योजनाबद्ध तरीके से हाइकु का लेखन इससे पूर्व कभी नहीं हुआ है। हाइकु कविता के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि रामकथा पर, रामकथा के विविध प्रसंगों पर 11 देशों के 151 हाइकु रचनाकारों ने 1008 हाइकु लिखे हैं। इनमें से कुछ रचनाकार तो ऐसे भी हैं, जिन्होंने इससे पहले किसी प्रकार की कोई कविता तक नहीं लिखी और न ही कभी हाइकु ही लिखे; लेकिन ह्यूस्टन में रहकर "श्री राम चरित भवन" का संचालन करने वाले राम-भक्त प्रो० ओमप्रकाश गुप्ता ने स्वयं हाइकु कविता से प्रेरित होकर दुनियाभर के लोगों को 'रामकथा' पर हाइकु लिखने के लिए प्रेरित किया। इन हाइकु कविताओं का चयन भी तीन चरणों में अलग-अलग तीन चयन समितियों द्वारा किया गया है। यद्यपि यह सच है कि 'हाइकु' छंद नहीं है, बल्कि संपूर्ण कविता है; परंतु इस संकलन की हाइकु कविताओं में आपको कुछ हाइकु ऐसे भी मिल सकते हैं जिनमें कविता कम, रामनाम की महिमा का चित्रण अधिक होगा। ऐसे हाइकु में कविता की गहराई न झाँककर 17 अक्षरी हाइकु में हाइकुकार की राम के प्रति भक्ति-भावना को ही देखना होगा।

कुल मिलाकर ‘राम’और ‘रामकथा’ पर केंद्रित यह हाइकु संकलन अपनी तरह का दुनिया का पहला हाइकु संकलन है। इसके लिए प्रोफ़ेसर ओमप्रकाश गुप्ता एवं उनकी पूरी राममय टीम की जितनी प्रशंसा की जाए; कम ही होगी। पूरी टीम के साथ-साथ संकलन में शामिल सभी हाइकु रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। मेरा सहज विश्वास है कि "राम हाइकु पीयूष" को देश-विदेश में भरपूर प्यार और सम्मान के साथ पढ़ा और सराहा जाएगा।

डॉ० जगदीश व्योम

सम्पादक, हिन्दी हाइकु कोश

॥ जय सियाराम ॥

हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।। (मानस 1.140. C5)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस के आरंभ में ही हमें बताया कि प्रभु अनंत हैं, उनकी कथाएँ भी अनंत हैं; संत जन उन कथाओं को विविध प्रकार से कहते हैं, सुनते हैं। लगभग 500 वर्ष पूर्व कही गई यह बात आज भी उतनी ही सार्थक, उचित और प्रासंगिक है, जितनी वह तब थी। भगवान राम की कथा विविध प्रकार से हजारों वर्षों से कही जा रही है। महर्षि वाल्मीकि ने सर्वप्रथम राम कथा को काव्य रूप में लिखा जो रामायण के नाम से हजारों सालों बाद भी बड़े आदर से पढ़ी जाती है। चूँकि रामायण विश्व की प्रथम काव्य रचना थी, इसके रचयिता ऋषि वाल्मीकि विश्व के आदिकवि बने और रामायण आदिकाव्य।

रामायण से प्रेरित होकर अनगिनत लेखकों और कवियों ने अपनी-अपनी मति के अनुसार विविध भाषाओं में भगवान राम की कथा का वर्णन किया है। जनभाषा अवधी में लिखी गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्री रामचरितमानस' पहले भारत में, फिर समस्त विश्व में अत्यधिक प्रचलित हुई। आज भी विश्व के कोने-कोने में श्री रामचरितमानस का अध्ययन व पाठ होता है।

महर्षि वाल्मीकि, गोस्वामी तुलसीदास व अन्य सैंकड़ों संतो से प्रेरित होकर भगवान राम की कथा को जानने, समझने और उसके प्रचार-प्रसार के लिए कुछ वर्षो पहले ह्यूस्टन, अमेरिका में 'श्री राम चरित भवन' संस्था ने जन्म लिया। संस्था ने राम कथा पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम किये। 2020 में कोरोना के कारण इन कार्यक्रमों ने ऑनलाइन स्वरूप धारण किया। इसी दौरान मेरा संपर्क डॉ. जगदीश व्योम जी से हुआ जो उस समय 'हिन्दी हाइकु कोश' पर काम कर रहे थे। श्री राम चरित भवन और वैश्विक हिन्दी संस्थान ने मिलकर हाइकु दिवस 4 दिसम्बर 2021 को एक अंतरराष्ट्रीय राम हाइकु गोष्ठी का आयोजन किया जिसमें देश-विदेश से 60 हाइकुकारों ने रामकथा पर अपने-अपने हाइकु पढ़े। इस गोष्ठी की सफलता से यह भाव जागृत हुआ कि भगवान राम और रामायण से संबधित स्वरचित उत्कृष्ट हाइकु कविताओं की एक पुस्तक की रचना हो। फलस्वरूप, राम हाइकु पीयूष की रचना हुई, जो आप के करकमलों में है।

राम हाइकु पीयूष में 1008 हाइकु कविताएँ हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ किया है। ये हाइकु 11 देशों (ऑस्ट्रेलिया, क़तर, भारत, मारीशस, नीदरलैंड, श्री लंका, सिंगापुर, ट्रीनिदाद, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई. और यू.एस.ए.) में बसे 151 कवियों द्वारा लिखे गये हैं। इससे यह बात तो सिद्ध होती है कि राम और रामायण मात्र भारत के

नहीं अपितु विश्वव्यापी हैं। 1008 हाइकु कविताओं में से 588 राम कथा के विविध स्वतंत्र हाइकु हैं। शेष 420 हाइकु रामकथा के 27 विभिन्न प्रसंगों पर हैं।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'राम हाइकु पीयूष' का संकलन संभव नहीं था, मैं उनका बड़ा ऋणी हूँ। उन सब कवियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस संग्रह के लिए अपनी-अपनी रचनाएँ भेजीं, और उन से क्षमाप्रार्थी हूँ जिनकी रचनाएँ हम शामिल करने में असमर्थ रहे। सब से अधिक ऋणी तो अपने संपादक मित्रों का हूँ जिन के कारण यह संकलन संभव हुआ। आदरणीया अलका प्रमोद (भारत), आभा खरे (भारत), चित्रा गुप्ता (सिंगापुर), मधु गोयल (भारत) विनीता मिश्रा (भारत), शिवप्रकाश अग्रवाल (भारत) और शैल अग्रवाल (यू.के.) - आप सब के अथक परिश्रम से ही यह 'राम हाइकु पीयूष' बन पाया है। हम आदरणीय डॉ. जगदीश व्योम के विशेष आभारी हैं, जिन्होंने समय-समय पर न केवल हमें मार्गदर्शन दिया, अपितु इस पुस्तक के लिये आमुख भी लिखा। श्री कमलेश भट्ट कमल जी के भी हम आभारी हैं, उन्होंने न केवल अमूल्य सुझाव दिये अपितु पुस्तक की समीक्षा भी लिखी। पुस्तक में आप के अमूल्य योगदान को सराहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। भगवान श्री रामचंद्र जी आप सब पर सदैव अनुकंपा बनाएँ रखें, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरण कमलों को सादर प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें, तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गईं हों, उनके लिए मैं अकेला दोषी हूँ, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। 'राम हाइकु पीयूष' के विषय में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। जय सिया राम।

सादर,
ओमप्रकाश गुप्ता
प्रधान सम्पादक
राम हाइकु पीयूष
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
रामनवमी, संवत 2079

समीक्षा

हाइकु में रामकथा के विस्तार का सराहनीय प्रयास

कमलेश भट्ट कमल

ओम गुप्ता यानी ओमप्रकाश गुप्ता जी अमेरिका में रहते हुए भी जिस तरह से राममय दिखाई देते हैं, उससे यह नहीं लगता कि वे कुछ और भी कार्य करते होंगे; जबकि वे वहाँ के एक बड़े विश्वविद्यालय में मैनेजमेंट के प्रोफेसर हैं। दरअसल राम-नाम की महिमा ही ऐसी है, वह जिसको व्याप्त हो जाए उसे महान बना देती है। तुलसी इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं। वाल्मीकि ने तो खैर, राम के समय को ही साक्षात देखा और जिया था। उन पर जब राम की कृपा हुई तो 'रामायण' जैसा दुर्लभ महाकाव्य भारत को ही नहीं बल्कि दुनिया को प्राप्त हो सका। इस संदर्भ से ओम जी का हाइकु कविता से जुड़ना एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना है और इस घटना के निमित्त बने हैं 'हिंदी हाइकु कोश' ग्रंथ के संपादक डॉ. जगदीश व्योम जी। इन दोनों के ही निरंतर संवाद और संपर्क का परिणाम है 'राम हाइकु पीयूष' जैसी यह विलक्षण हाइकु कृति। इस पुस्तक के माध्यम से ओम जी ने पूरी दुनिया के हाइकुकारों को राम के नाम की माला में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। माला भी ऐसी जिसमें थोड़े-बहुत नहीं बल्कि 1008 मनके हैं! आखिर 11 देशों के रचनाकारों से रामकथा पर केंद्रित हाइकु लिखवा लेना इतना सहज भी न था; लेकिन लिख वही सके जिन पर स्वयं राम की कृपा हुई। यदि मैं स्वयं अपने अनुभव की बात करूँ तो शुरू में लगता था कि ऐसा क्या कुछ लिखा जाना शेष है जिसे तुलसी ने रामचरितमानस में न लिख दिया हो; लेकिन जब राम की कृपा हुई तो मैंने कोई एक दर्जन हाइकु लिख डाले, जिनमें से दस इस पुस्तक में भी स्थान पा सके। अब इस कृति की परिकल्पना को साक्षात होते देखकर लगता है कि इसका अंग बन पाना भी अपने आप में सौभाग्य जैसी ही बात है। मैं समझता हूँ ऐसा ही कुछ हर एक रचनाकार के साथ हुआ होगा और तब जाकर 1008 हाइकु कविताओं की यह माला पूरी हो पाई है।

इन हाइकु कविताओं में राम के प्रति श्रद्धाभाव, भक्तिभाव और समर्पण भाव के साथ-साथ अध्यात्म और दर्शन की भी झलक देखने को मिलती है। इस संकलन में रामकथा में समाहित पीड़ा, दुःख,अवसाद, कटुता, क्षोभ, विषाद, अन्तर्विरोध, संघर्ष, जिजीविषा, अत्याचार, अनाचार, हाहाकार, न्याय-अन्याय और पारिवारिक तथा सामाजिक रिश्तों पर भी हाइकुकारों की दृष्टि गई है। इसलिए ये हाइकु कविताएँ रामकथा के प्रसंगों को उनकी संपूर्णता में देखने और अभिव्यक्त करने का प्रयास करती दिखाई देती हैं, जो खासा महत्वपूर्ण है।

मैं समझता हूँ, राम कथा पर केंद्रित हाइकु कविताओं का यह प्रथम संकलन ही है जो प्रकाशन के स्तर तक पहुँच सका है। कहना न होगा कि इस पुस्तक के माध्यम से राम के प्रति हाइकुकारों की सामूहिक दृष्टि और चेतना का प्रस्फुटन होता हुआ देखा जा सकता है। पूर्व में इससे थोड़ा हटकर, कम से कम दो प्रयासों का संदर्भ हमें प्राप्त होता है। पहला संदर्भ अत्यंत महत्वपूर्ण हाइकुकार स्वर्गीय राधेश्याम द्वारा हाइकु कविताओं में रामायण के अनुवाद का है। हाइकु कविता के दिशा वाहक प्रोफेसर सत्य भूषण वर्मा(स्व.) ने हिंदी के प्रथम प्रतिनिधि हाइकु संकलन 'हाइकु 1989' की प्रस्तावना में इसका उल्लेख करते हुए लिखा है कि 'राधेश्याम ने राधा-कृष्ण के पौराणिक प्रसंगों को हाइकु का विषय बनाया है। उन्होंने हाइकु शैली में पूरी रामायण की रचना की है जो प्रकाशन की प्रतीक्षा में है'(हाइकु-1989' पृष्ठ-17)। इसी प्रकार के एक अन्य प्रयास का उल्लेख जापानी हाइकुकार प्रो.तेइजी सकाता द्वारा किए जाने का उल्लेख मिलता है। यह उल्लेख हिंदी की महत्वपूर्ण पत्रिका 'पहल' के माध्यम से सामने आया है। जापान यात्रा पर गए कवि मंगलेश डबराल(स्व.) लिखते हैं कि 'कार्यक्रम ताकुशोकु के प्रोफेसर तेइजी सकाता की देखरेख में हो रहा है लेकिन उनका मन आधुनिक हिंदी कविता की बजाय वृंदावन की कुंज-गलियों में ज्यादा रमता है और वे इन दिनों रामचरितमानस का हाइकु में अनुवाद कर रहे हैं।' ('पहल'-88, मार्च-अप्रैल 2008 अंक, पृष्ठ-64) उक्त दोनों पुस्तकों के अभी तक प्रकाश में आने की कोई सूचना उपलब्ध नहीं है। दूसरा, उक्त दोनों दो रचनाकारों के अलग-अलग प्रयास हैं और मौलिक न होकर अनूदित हैं। जबकि 'राम हाइकु पीयूष' 151 हाइकु कवियों की रामकथा केन्द्रित मौलिक हाइकु कविताओं की भावांजलि है। यहाँ अनुवाद जैसा कुछ भी नहीं है। इसलिए अलग से रेखांकित किए जाने योग्य है।

विषय केंद्रित हाइकु कविताओं की अपनी सीमाएँ और चुनौतियाँ होती हैं, जो इस कृति के रचनाकारों के समक्ष भी रही होंगी। कई रचनाकार इन सीमाओं और चुनौतियों को पार करते हुए भावपूर्ण हाइकु देने में सक्षम हुए हैं। इस पुस्तक के लिए ओम जी की राम के साथ प्रतिबद्धता तो श्लाघनीय है ही, यह उनकी अद्भुत संयोजन-क्षमता तथा उनके प्रबंधकीय कौशल का भी सुफल है। शुभकामनाओं सहित!

कमलेश भट्ट कमल
4 अप्रैल 2022
तृतीय नवरात्रि, चैत्र शुक्लपक्ष, संवत 2079

अनुक्रमणिका

राम हैं कौन? 1

प्रथम खण्ड: विविध हाइकु 2

द्वितीय खण्ड: प्रासंगिक हाइकु 38

राम कथा - रेणु चन्द्रा माथुर … … … … … 38

राम की यात्रा - रश्मि वार्ष्णेय 39

बालकाण्ड - नीना छिब्बर … … … … … 40

पुत्र-कामेष्टि यज्ञ - रीता पाण्डेय 41

राम बालकाल्य - अर्चना प्रकाश … … … … 42

धनुष यज्ञ - मुक्ता श्रीवास्तव 43

धनुष भंग - माया बंसल … … … … … 44

सिया वरण - नीलम वर्मा 45

राम विवाह - अर्चना प्रकाश … … … … … 46

कैकेयी प्रसंग - लता अग्रवाल ‘तुलजा’ 47

दो वरदान - सुषमा नैय्यर … … … … … 48

राम वनवास - अलका प्रमोद 49

पुत्र वियोग - प्रेमलता माहेश्वरी … … … … 50

उर्मिला प्रसंग - रीता पाण्डेय 51

केवट प्रसंग - विनीता मिश्रा … … … … … 52

शूर्पणखा-रावण संवाद - दिव्या शर्मा 53

सीता हरण - वीणा पाठक … … … … … 54

शबरी भेंट - नीलीमा तिग्गा 55

शबरी भक्ति - शकुन्तला पालीवाल … … … 56

नवधा भक्ति - रामकृपाल 'कृपाल' 57

हनुमान-सीता भेंट - नीना छिब्बर … … … … 58

हनुमान का लंका गमन - शालिनी गर्ग 59

सीता-हनुमान संवाद - विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप' 60

लंका दहन - अनिता कपूर 61

मन्दोदरी-रावण संवाद - चित्रा गुप्ता … … … … 62

सीता परित्याग - सुरंगमा यादव 63

रामायण में गिनती - ओमप्रकाश गुप्ता … … … 64

राम हैं कौन?
ब्रह्म, देव, मानव
मात्र कल्पना!

राम-प्रकृति
सत्यं- शिवं- सुंदरं
राम-संस्कृति!
अलंकार आच्छा, चेन्नई

देव पुरुष
महामानव रूप
कल्याणकारी
नीना छिब्बर, जोधपुर

राम हमारे
निराकार देव के
साकार रुप
ममता उपाध्याय, वाराणसी

राम का सत्य
वर्णन अनुपम
सच्चिदानंद
विनीता मिश्रा, लखनऊ

हैं अवतार
राम धरती पर
विष्णु का रूप
वीणा पाठक, इंदौर

हरि स्वरूप
श्रेष्ठ मानव रूप
दयानिधान
आभा खरे, लखनऊ

भक्ति भाव हो
जो राम रूप दिखे
वही है राम
अलका प्रमोद, लखनऊ

धरा चेतना
का अभ्युदय किया
वह है राम!
मीनू अग्रवाल, बर्मिंघम, यू.के.

राम तो राम
प्रश्न में है उत्तर
सर्वदा साथ!
शैल अग्रवाल, बर्मिंघम, यू.के.

मानव रूप
राम हरि स्वरूप
कल्पना नहीं!
रेणु चन्द्रा माथुर, यू.एस.ए.

प्रथम खण्ड: विविध हाइकु

अंजलि तिवारी मिश्रा
बस्तर, भारत

1. सीता के पति
   अयोध्या के जनक
   राम तुम हो

अनुज मेरठी
मेरठ, भारत

2. भज ले राम
   पार करेंगे नैया
   प्रभु निष्काम

3. पाने दर्शन
   तरस गईं आँखें
   लौट आ राम!

4. प्रभु श्रीराम
   दशरथनंदन
   तुझे प्रणाम

अन्नपूर्णा श्रीवास्तव
पटना, भारत

5. रघुनंदन
   रविकुल चंदन
   कौशल्यात्मज

6. नवमी तिथि
   दशरथ सुवीथि
   रामावतार!

7. यज्ञ रक्षार्थ
   ताड़का संहारार्थ
   राम लखन

8. जनकपुर
   कर पिनाक चूर
   बियाहे सिय!

9. लौटे अवध
   कर सर्वार्थ सिद्ध
   सानुज्यभार्या!

10. हर्षातिरेक
    राम राज्याभिषेक
    छाये उमंग!

अमित शाह
नागपुर, भारत

11. सुंदरकांड
    महावीर की लीला
    रावण देखे

12. राम मुद्रिका
    आंजनेय दे रहे
    सीता की गोद

अम्बे कुमारी
गया, भारत

13. लंका दहन
    हनुमत गर्जन
    असुर नाश

अरविंद भगानिया
यू.ए.ई.

14. पालनहारे
    तुम सबके राम
    जय श्री राम

अरविन्द कुरील
मुंबई, भारत

15. व्याकुल मन
हाय! जनकसुता
मन अधीर

16. ऐ समुन्दर!
छोड़ अपनी हठ
टूटेगा अहं

17. सिर के बल
दशानन के सिर
फिर से गिरे

अरुण प्रदीप शर्मा
मुम्बई, भारत

18. तारणहार
अयोध्या अधिपति
हम अहल्या

19. राम लक्ष्मण
गए पुष्प वाटिका
सीता दर्शन

20. शिव धनुष
योग्यता की परीक्षा
वर ली सीता

21. वामांगी सीता
नीलकमल राम
मोहक छवि

22. मंथरा चाल
बदल डाले भाग्य
टले न होनी

अलंकार आच्छा
चेन्नई, भारत

23. फटी जो धरा
हिय फटा राम का
समायी सीता

24. खींच ले लाया
सब्र शबरी जैसा
प्रभु को द्वारे

25. मरा अहं भी
रावण के ही साथ
राम के हाथ

26. बेतुकी माँग
कैकयी ने उजाड़ी
स्वयं की माँग

27. इच्छा अनन्त
सूर्पणखा ले आयी
कुल का अंत

28. पवन पुत्र
बने स्वयं ईश्वर
भक्ति में भक्त

29. रहे विरत
ऋषि सम भरत
चौदह वर्ष

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

30. चार हैं भ्राता
विविध प्रकृति के
सदैव एक

31. कुत्सित भाव
माता बनी विमाता
सब बिखरा

32. अहल्या तरी
महिमा विश्वास की
कृपा राम की

33. हारी थी लंका
अपमान भाई का
पड़ा था भारी

34. दंभी जो हुआ
रावण के समान
नाश निश्चित

35. राम का नाम
है शक्ति अलौकिक
बड़ा राम से

36. पाप बढ़ा था
अवतरित राम
किया उद्धार

37. नैतिक शिक्षा
है श्रेष्ठ उद्धरण
रामायण में

अलका
नोएडा, भारत

38. राम की कथा
दूर कर देती है
मन की व्यथा

39. भीलनी लायी
प्रेम से सने बेर
खाये राम ने

आभा खरे
लखनऊ, भारत

40. लक्ष्मण रेखा
निरुपाय देखती
छल की जीत

41. प्रतीक्षा-धूप
आस की छाँव देती
राम मुद्रिका

42. लौटे भरत
मात्र खड़ाऊँ नहीं
ले संकल्प भी

43. जटायु धन्य!
प्रभु की बाँहों में ली
अंतिम साँस

44. प्रीति अश्रु से
राम चरण रज
केवट धोए

45. तमस घेरे
स्वर्ण हिरण मोह
मति को फेरे

46. पीर अकथ
भरा बिछोह जल
उर्मिला- नैन

47. राम-भरत
समर्पण सिंचित
प्रेम ही प्रेम

48. हैं पाठशाला
दशरथनंदन
अथ से इति!

आर. पी. शुक्ल
लखनऊ, भारत

49. हर देह में
एक मंथरा मिली
ज़हर बोते!

50. कृष्ण से गीता
राम से रामायण
जीने की राह!

51. रावण जला
हर साल, लेकिन
मरा क्यूँ नहीं?

52. हठी समुद्र
आ गया घुटनों पे
राम के आगे!

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

53. अग्नि परीक्षा
माता तुमने दी क्यों
हत स्त्री ईक्षा

54. पति चरण
गहे वन भटकीं
अनुकरण

55. तेज तुम्हारा
तृण सतीत्व रक्षा
रावण हारा

56. भूमिजा माते
पृथ्वी को पुकारती
गर्भ समाती

57. मांडवी प्रणी
भरत तपोव्रती
धर्मानुगामी

58. साध्वी त्रिजटा
सीता रक्षार्थ रत
न थी राक्षसी

आलोक मिश्रा
सिंगापुर

59. पितृ वचन
राघव ने स्वीकारा
वन्य जीवन

60. दंडकवन
जाकर राम बने
पुरुषोत्तम

61. नारी सम्मान
श्री राम का संकल्प
अहल्या मुक्ति

62. राम ने खाए
प्रेम में पगे बेर
बड़े चाव से

63. केवट माँगे
जीवन का उद्धार
पारिश्रमिक

64. हठी सागर
विनती की अवज्ञा
क्रोध ही शस्त्र

65. मुँदरी मिली
अवनिसुता पीड़ा
अश्रु में धुली

66. तृण प्राचीर
आस्था से बनी-सजी
रावण हारा

67. दम्भी रावण
दूत का अपमान
लंका दहन

68. राम को मिला
विजय वरदान
शक्ति पूजा से

आशा मोर
पोर्ट ऑफ स्पेन, त्रिनिदाद

69. जन्में हैं राम
धूम मची अयोध्या
राम नवमी!

70. कैकेयी माता
लिये दो वरदान
दशरथ से

71. रावण वध
विजयी राम सेना
देव प्रसन्न

72. राम राज्य हो
विश्व की अभिलाषा
कठिन कार्य!

इन्दु गुप्ता
फरीदाबाद, भारत

73. मानव हेतु
जीवन-मूल्य सेतु
श्री रामायण

74. मंथरा चेरी
कैकेयी बुद्धि फेरी
माँगे दो वर

75. विरह दग्ध
उर्मिला का प्रारब्ध
चौदह वर्ष

76. राम! हे राम!
रटते दशरथ
सिधारे धाम

77. सीता हरण
रावण-राम युद्ध
बना कारण

78. ताकती राह
शिला बनी अहिल्या
कहाँ हो राम?

79. मिले श्री राम
हर्षित हनुमान
भक्त महान

80. सीता ने भोगा
दो बार वनवास
कैसा संत्रास

इन्दुकांत आंगिरस
नई दिल्ली, भारत

81. राम के नाम
कर दो हर साँस
बढ़े उजास

82. आया मारीच
बन सोने का मृग
छले राम को

83. पंपासुर में
मिले हनुमान से
लगाया गले

उषा गौड़
देहरादून, भारत

84. सिया संदेश
लाये पवनसुत
हर्षित राम

उषा श्रीवास्तव
बेंगलुरु, भारत

85. अवधपति
श्री दशरथ गृह
जन्मे श्री राम

86. रावण गर्व
हुआ चकनाचूर
टूटा धनुष

87. हर्षित जन
है परिणयोत्सव
सियाराम का

88. कैकेयी वर
किया अति अनर्थ
महाविषाद

89. त्याग महान
उर्मिला सम नहीं
लक्ष्मण भार्या

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

90. रावण रथी
राघव रथहीन
प्रभु की माया!

91. अग्नि परीक्षा
जानकी प्रकटन
व्यर्थ विवाद!

92. वन में राम
भरत ननिहाल
पिता मरण!

93. सीता हरण
गीधराज मरण
राम क्रंदन!

94. बना भिक्षुक
अविजयी रावण
नारी के लिये!

95. परशुराम
राम से बड़ा नाम
हुए भ्रमित!

96. विश्वविजयी
लंकापति रावण
नारी से छल!

97. अवधपति
देवराज के मित्र
पुत्र विहीन!

98. हैं राम ब्रह्म
या ब्रह्म हैं राघव?
मन में प्रश्न

99. पटरानी थीं
हा! नहीं रोक सकी
वनगमन

100. राम-सा पुत्र
था वीर मेघनाद
पितृ सेवा में

101. तुलसीदास
संस्कृति के रक्षक
अतुल्य तुम!

102. राम हाइकु
एक नया प्रयोग
प्रभु स्तुति का!

103. परशुराम
विष्णु के अवतार
स्वयं को भूले!

104. कुख्यात डाकू
लिख दी रामायण
राम-कृपा से

105. भोला केवट
वचन अटपटे
भाये प्रभु को

106. शबरी भोली
जूठे बेर राम को
दिये प्रेम से

कंचन लता पाण्डेय
नोएडा, भारत

107. कथा राम की
है जीवन दर्शन
आदर्श गाथा

108. शिव पूजन
पंडित दशानन
कैसा संयोग

कमलेश भट्ट कमल
नोएडा, भारत

109. राम से नहीं
अभिमान से हारा
ज्ञानी रावण!

110. असीम राम
ससीम सागर से
राह माँगते!

111. वन-वन में
नियति भटकाये
स्वयं राम को!

112. सहने पड़े
स्वयं श्रीराम को भी
अथाह दु:ख!

113. श्रीराम-कथा
हरे कितनों की ही
दारुण व्यथा!

114. व्यथित राम
स्वयं हरें लोगों के
दुख तमाम!

115. अति-अति में
दुष्टा बनी मंथरा
स्वामिभक्ति में!

116. माया का मृग
पर पीछे भटके
ज्ञानी राम भी!

117. नर कहाँ था
युद्ध में कोई संगी
नारायण का!

118. भक्तों की भक्ति
देती रही राम को
असीम शक्ति

काजरी गुहा
कोलकाता, भारत

119. सोने का मृग
भाग्य का परिहास
छली मारीच!

120. लंका नरेश
करे सीता हरण
सीता विवश!

121. हनुमान जी
पड़े भारी सबको
लंका दहन!

122. न्याय-अन्याय
है कथा रामायण
करें सम्मान!

123. बंदिनी सीता
अशोक वाटिका में
दुखी विह्वल!

124. माँगे सीता के
अश्रुसिक्त नयन
राम दर्शन!

125. पवनपुत्र ने
दी सीता को मुद्रिका
बालिहंता की!

काशी नाथ मिश्र
मधुबनी, भारत

126. सिया के राम
वन-वन में फिरे
सिया के लिए

किशोर आर. टंडेल
नवसारी, भारत

127. विभीषण को
राजतिलक करें
राम प्रेम से

कैलाश गिरि गोस्वामी
बाँसवाड़ा, भारत

128. जय श्री राम
है अयोध्या नगरी
आपका धाम

129. चौदह वर्ष
राम, लखन, सिया
रहे वन में

130. शापित नारी
शिला बन पड़ी थी
राम ने तारी

131. लोकाभिराम
मानवता प्रतीक
रामावतार

गंगा पांडेय 'भावुक'
प्रतापगढ़, भारत

132. चाहिये सीता
रावण सा चरित्र
सोच विचित्र

133. भरत भाई
चाहता हर कोई
हैं स्वयं बाली

134. मामा मारीच
छद्म रूप प्रतीक
सीता भ्रमित

गोपेश वाजपेयी
भोपाल, भारत

135. गुह मुदित
मैं सेवक निषाद
दूर विषाद

136. लंका दहन
रिपु दल दमन
जय श्रीराम

137. जलधि जड़
विनय अनसुनी
भय से प्रीति

चंद्रिका दर्जी
अरवली, भारत

138. जानकी नाथ
हनुमान के प्राण
पालनहार

139. पालनहार
विष्णु के अवतार
जय श्री राम

140. पवनसुत
अंजनी के दुलारे
दुख भंजन

141. दुख भंजन
अहल्या उद्धारक
सिया के राम

142. सिया के राम
विभीषण के नाथ
राजा श्रीराम

चन्द्रकान्त पाराशर
शिमला, भारत

143. बिसरे राम
पतवार विहीन
डूबती नाव

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

144. लक्ष्मण रेखा
प्रतीक मर्यादा की
पालन करें

145. तृण मात्र से
लंकेश भयभीत
सीता प्रताप

146. रावण हठ
मंदोदरी की व्यथा
सिया समझे

147. राम की शक्ति
अंगद तन आई
पग अडिग

148. त्रिजटा स्नेह
अशोक वाटिका में
सीता का साथी

149. किया राम को
नागपाश से मुक्त
धन्य गरुड़

150. नापा गगन
सम्पाती जटायु ने
छूने रवि को

151. सूर्य प्रखर
जले सम्पाती-पंख
हुआ अचेत

152. राम मोह में
आसक्त शूर्पणखा
बनी कुरूपा

जगदीश व्योम
नोएडा, भारत

153. वन में ही क्यों
मन में भी होते हैं
सोने के मृग!

154. श्रीराम कथा
युगों से हर रही
लोक की व्यथा

155. अपनी पीड़ा
खोज लेता है लोक
राम कथा में!

156. राम की कथा
लोक-हिमालय की
पावन गंगा

157. कथा ही नहीं
पूरी संस्कृति भी है
राम-चरित

158. राम निकले
सिंहासन को छोड़
लोक देखने

159. हद-बेहद
तपते रहे राम
बने मिथक

160. तोड़ देतीं हैं
घरों को मंथराएँ
बात-बे-बात

डी. पी. सिनालि नदीपमा पतिरण
कैगल्ल, श्रीलंका

161. हलका हुआ
वैदेही प्रेमवश
शिवधनुष

162. आये हैं राम
जब से चित्रकूट
सब प्रसन्न

तारा प्रजापत 'प्रीत'
जोधपुर, भारत

163. रघुवंश में
दशरथनंदन
प्रकट हुए

164. माता कौशल्या
निरखे हर क्षण
राम लला को

165. जनक पुत्री
रघुनन्दन भार्या
आदर्श पत्नी

166. आज्ञा पालन
राम, लखन, सीता
वनगमन

167. शबरी माता
राम दर्शन प्यासी
राह निहारे

तारिका सिंह
लखनऊ, भारत

168. राम की कथा
सत्यमेव जयते
यही है शिक्षा

169. त्याग वैभव
रखा पितृवचन
पुरुषोत्तम

170. श्रेष्ट दृष्टांत
रघुकुल मर्यादा
राघव राम

171. जानकी संग
वनवास गमन
रखा वचन

172. वन में वास
कंदमूल भोजन
तप महान

173. कलियुग में
चहुँ ओर रावण
पधारो राम

174. असत्य भारी
रावण मरा नहीं
युद्ध है जारी

तुकाराम पुंडलिक खिल्लारे
परभणी, भारत

175. जटायु ज़ख़्मी
एक ही अभिलाषा
मिलें श्रीराम

176. लव-कुश ने
पकड़ा यज्ञ अश्व
विस्मित राम!

177. साँस-साँस में
प्रभु राम स्मरण
दुःख हरण

तृप्ति गोस्वामी 'काव्यांशी'
जोधपुर, भारत

178. हुए प्रकट
हरने को संकट
रघुनंदन

179. श्री रामचंद्र
कर्त्तव्य परायण
सदा अडिग

180. भ्राता लक्ष्मण
जीवन समर्पण
राम के प्रति

181. लौटे अवध
कर रावण वध
सीतारमण

दीप्ति अग्रवाल
दिल्ली, भारत

182. विधि का लेखा
मंथरा रची चाल
रची 'मानस'

183. शबरी बेर
नारी दलित एक
सिर्फ था प्रेम

184. आदर्श कथा
तुलसी की 'मानस'
संकटहारी

दीप्ति गौड़ 'दीप'
ग्वालियर, भारत

185. श्रीराम प्रभु
विष्णु के अवतार
नमन करूँ

186. शबरी बेर
प्रेम श्रद्धा में पगे
खाये राम ने

187. तुलसीदास
रचा रामचरित
बने महान

दीप्ति मिश्रा
वापी, भारत

188. साँवरो रूप
पुरुषोत्तम राम
छवि अनूप

189. राघव दूल्हा
वधू जानकी प्यारी
शोभा है न्यारी

190. मोह न द्वेष
पितु आज्ञा विशेष
तापस भेष

191. राम गमन
दशरथ मरण
सूनी अयोध्या

192. राम दर्शन
पुण्य हुए उदित
शबरी मग्न

193. तिलक भाल
श्यामल रूप राम
नैना विशाल

दुर्गा अशोक सिन्हा
फरीदाबाद, भारत

194. कौशल्या सुत
दशरथनंदन
राजा राम हैं

195. भक्ति भाव है
भव भय भंजन
राम भजन

196. पुष्प वाटिका
प्रथम मिलन है
राम सिया का

197. सीता हरण
प्रयोजन जग के
हित की रक्षा

198. वानर भील
रावण वध हेतु
हुई मित्रता

199. आनंदित हैं
नगर के निवासी
विजयी राम

नमिता सिंह 'आराधना'
अहमदाबाद, भारत

200. कनक मृग
भोली सीता का हठ
राम विवश

201. छली रावण
भिक्षु रूप धारण
सीता हरण

202. वानर सेना
समुद्र पर सेतु
लंका प्रयाण

203. यज्ञ का फल
जन्मे चार कुमार
रघुकुल में

204. आज्ञा पिता की
करे जो शिरोधार्य
राम समान

205. जूठे बेर खा
शबरी का उद्धार
महान राम

206. सीता विलाप
गरुड़ पंख काट
रावण चला

207. पुष्पवाटिका
सिया बैठी उदास
मन में राम

208. राम मुद्रिका
हनुमान दिखाए
सीता विह्वल

निर्मल जैन 'नीर'
उदयपुर, भारत

209. सुबह शाम
घट-घट में बसे
प्रभु श्री राम

210. निर्मल भाव
पत्थर तैर जाते
लो राम-नाम

निर्मला सिंह
लखनऊ, भारत

211. जगत-रूपा
रोये शिशु समान
माता मुस्कायी

निवेदिता सिन्हा
भागलपुर, भारत

212. वन गमन
भाई, पत्नी हैं संग
राम नमन

213. राम पधारे
हर्षित ऋषिगण
धरा प्रसन्न

214. किया उद्धार
संहार दानव का
कर्म राम का

निशा महाराणा
मंदसौर, भारत

215. टूटा धनुष
हर्षित हुआ मन
पिया मिलन

216. लक्ष्मण रेखा
रामायण संदेश
नहीं लाँघना

217. भाई की सेवा
बना जीवन सार
त्यागा संसार

218. लाया संदेश
अशोक वाटिका में
राम का दूत

निहाल चंद्र शिवहरे
झांसी, भारत

219. रामलखन
जन-जन नायक
शक्तिदायक

220. पवनसुत
अतुल बलधारी
दुष्टों पे भारी

221. कृपालु राम
दया हो हम पर
मिले श्री धाम

222. पंचवटी में
नयन अभिराम
राम निवास

नीलम झा
हैदराबाद, भारत

223. सुरभि फैली
चैत्र माह नवमी
जो राम आए

224. राम व सीता
मनभावन जोड़ी
सौम्य, सलोनी

225. कोयल कूकी
चित्रकूट हर्षाया
निरख राम

226. जनक सुता
देती अग्नि परीक्षा
कैसी ये दशा

नीलम वर्मा
नई दिल्ली, भारत

227. माँ गौरी अम्बे
कीजिए कृपादृष्टि
आनंद वृष्टि

228. सुमन वर्षा
करते देवगण
सिया वरण

229. परशुराम
धारे रूप कराल
नेत्रों में ज्वाल

230. पूछते प्रश्न
कौन यहाँ उद्दंड?
दूँ अभी दंड!'

231. लक्ष्मण वीर
बिजली से कड़के
ऋषि भड़के

232. विनम्र राम
बालसुलभ वाणी
भाषा कल्याणी

233. उतरा रोष
शीतल ऋषि मन
आशीर्वचन

234. वरदायिनी
भगवती प्रसन्न
पूजा संपन्न

235. स्वर्ण कलश
सज्जित घर द्वार
बन्दनवार

नीलम शर्मा
नई दिल्ली, भारत

236. घट के प्राण
गौरव प्रतिमान
जय श्रीराम

237. राम आदर्श
राम पुरुषोत्तम
कुलभूषण

238. मृदु स्वभाव
हर उर में बसें
सबके राम

239. अतुलनीय
सर्वगुण सम्पन्न
राम हमारे

240. घमंड डंका
रावण, स्वर्णलंका
दोनों ही खाक

241. राम लखन
संग मातु जानकी
वन में वास

242. कनक मृग
भ्रमित हुए दृग
राम विवश

नीलू गुप्ता
फ्रीमॉन्ट, यू.एस.ए.

243. अयोध्या जन्मे
कुँवर राम लला
मंगलकारी

244. तीनों ही मैया
जा रहीं बलिहारी
लाड़ लड़ावें

245. हृदय बसे
हनुमंत के राम
कार्य सफल

पिंगलेश कचौले
इंदौर, भारत

246. राम बसे हैं
जल-थल, नभ में
प्रतिबंधों में

247. राम विराजे
भजन, यज्ञ, तप
दान धर्म में

248. राम ही राजे
गीता, वेद, पुराण
शास्त्र मर्म में

249. राम रमे हैं
भाव भक्ति सज्जन
साधु संतो में

250. राम सजे हैं
मठ, मंदिर, घर
माला ग्रन्थों में

251. राम बसे हैं
सब जड़-चेतन
घट घट में

पीयूष चतुर्वेदी
मुम्बई, भारत

252. सिंधु का अहं
देख राम के बाण
करे प्रणाम

253. राम के पाँव
केवट यूँ पखारे
जन्म सँवारे|

254. जग हर्षाये
राम सिया ब्याह के
अयोध्या आये

255. भक्त की टेर
स्वाद से खायें राम
शबरी बेर

256. साधु भरत
राम पादुका राज
अयोध्या काज|

257. हरि ने हरी
माँ कैकेयी की मति
भई दुर्गति

258. चले भरत
लिये साथ अयोध्या
लौटाने राम

पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'
जयपुर, भारत

259. अज्ञ कुहरा
ढँके अंतकरण
राम न सूझे

260. राम कस्तूरी
मृग ढूँढ़े वन में
जो है भीतर

261. अमल मन
अविचलित भक्ति
राम प्रगटें

262. अहं धनुष
सत्य ही तोड़ सके
प्रसाद भक्ति

263. राम दर्शन
राज्य मिले या वन
सम आचार

264. रावणी दंभ
अमावस स्वीकार
सूर्य विरोध

पुष्पा पालीवाल
कांकरोली, भारत

265. दुःख दे गए
उधार रह गए
तीन वचन

266. मिसाल एक
भाई-भाई का प्रेम
भरत नाम

267. महाप्रतापी
शिव भक्त अनोखा
था दशानन

268. घना कानन
दमक रहा स्वर्ण
मारीच मृग

पुष्पा मेहरा
दिल्ली, भारत

269. भक्ति के वश
प्रभु राम ने खेयी
माँझी की नैया

270. शबरी हित
मुक्ति का धाम बने
जूठे वे बेर

271. दम्भी रावण
हर ले गया छाया
सीता स्वरूप

272. की नर लीला
वन-वन भटके
पालनहार

273. भक्ति विह्वल
हनु के उर बसे
सिया व राम

पुष्पा सिंघी
कटक, भारत

274. कहाँ न राम?
जल-थल अम्बर
सर्वत्र तुम

275. सत्य शाश्वत
खुले-मुँदे नयन
छवि राम की

276. खिले पद्म से
मन सरोवर में
जय श्री राम

277. पितृ वचन
समर्पित जीवन
वही है राम

278. युग वन्दित
है बिम्ब-प्रतिबिम्ब
रामचरित

279. मैं ही शबरी
केवट औ निषाद
राम की आस

पूजा लाल
प्रयागराज, भारत

280. राम लला की
निरख छवि न्यारी
माँ बलिहारी

281. कौन थामेगा
बीच मझधार में
बिना राम के

पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा'
नागपुर, भारत

282. विधि का खेल
वन-वन भटके
माता जानकी

283. तट उल्लास
मंदाकिनी का स्पर्श
चित्रकूट में

284. पुष्प वाटिका
गौरी-पूजन हेतु
जानकी आयीं

पृथ्वी सिंह बैनीवाल
हिसार, भारत

285. कौशल्या सुत
श्रीराम है विश्वास
सब की आस

286. अयोध्यापति
दशरथनन्दन
जन वंदन

287. मानव रूप
मर्यादा अवतार
पाप संहार

प्रतिभा जोशी
अजमेर, भारत

288. त्रेता के राम
विष्णु के अवतार
पालनहार

प्रतिमा प्रधान
नोएडा, भारत

289. चरणस्पर्श
शिलावत अहल्या
पाप से मुक्त

290. नारी सम्मान
धर्म रक्षा प्रधान
बाली का वध

291. स्वर्ण हिरण
है मृगमरीचिका
दुष्परिणाम

फूल चंद्र विश्वकर्मा
हलवारा, भारत

292. कथा कानन
राम चंदन तरु
सुरभि व्याप्त

293. वनगमन
सिया राम लखन
सूना अवध

294. धर्म-अधर्म
संग्राम घनघोर
धर्म विजित

बृंदावन राय सरल
सागर, भारत

295. राम चरित
जो देता हर क्षण
जीवन शिक्षा

296. राम भजन
करे मन आँगन
धूप चंदन

297. राम के भक्त
नहीं होते आसक्त
यही है सत्य

बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'
इंदौर, भारत

298. गये विटप
संग विश्वामित्र के
ताड़का मारी

299. पाठ पढ़ाने
मर्यादा का हमको
राम पधारे

300. रावण मारा
भूमिभार उतारा
रघुवर ने

भारती चौधरी
हिम्मतनगर, भारत

301. पवनसुत
सीता, राम,लखन
हृदय वास

भावना कुँअर
सिडनी, ऑस्ट्रेलिया

302. थे बलशाली
कर धनु भंजन
सीता ब्याह ली

303. मुकुट त्याग
राम चले वन को
प्रजा उदास

304. छोड़ भवन
संसार हित हेतु
वन गमन

305. राम उदास
वन वन भटके
सीता न पास

306. राम जो आए
हर चौखट पर
दीप मुस्काए

307. जप ले राम
मिल जाएँगे तुझे
चारों ही धाम

मंजु महिमा
अहमदाबाद, भारत

308. नौका मन की
राम-नाम सागर
तैरे निर्बाध

309. बेर शबरी
न जाने जाति धर्म
राम को भाए

310. सत्य की सीता
की जा रही हरण
कई रावण

311. धर धीरज
तोडा धनु राम ने
अहंकार का

मंजु शर्मा जांगिड 'मनी'
जोधपुर, भारत

312. सीता हरण
सुनहरा हिरण
बना मारीच

313. दौड़े श्रीराम
तज के सारे काम
मृग के पीछे

मंजुला चतुर्वेदी
मुम्बई, भारत

314. पितृ वचन
राम सीता लखन
वन गमन

मंजू यादव
इटावा, भारत

315. राम गमन
अस्त हुआ सूरज
सुख का जैसे

316. धन्य केवट
चरण धोते-धोते
धो लिए पाप

317. मूढ़ कैकेयी
वरदान या शाप
क्या माँग बैठी!

मधु खन्ना
ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया

318. शक्ति प्रेम की
समायी तिनके में
भक्ति सीता की

मधु गोयल
लखनऊ, भारत

319. धन्य अवध
जन्मे थे जहाँ राम
जग-पालक!

320. हिला न पाया
शिव-धनुष कोई
राम ने तोड़ा!

321. राम-भरत
भ्रातृ प्रेम-मिसाल
सदियों तक!

322. भूले कपीश
दिलाये जामवंत
शक्तियाँ याद!

323. रावण कई
आज भी प्रतिदिन
हरते सीता!

324. हमेशा भारी
बुराई पे अच्छाई
मानस-सीख!

325. ज्ञान-भंडार
सम्पूर्ण रामायण
गढ़े जीवन!

मधु माहेश्वरी
सलुम्बर, भारत

326. सुग्रीव साथी
बात के धनी राम
निभाया साथ

मधु वैष्णव 'मान्या'
जोधपुर, भारत

327. आत्म सम्मान
रामायण आधार
श्री रघुवर

328. अति उत्तम
संस्कारी अनुपम
अयोध्या नाथ

मनीष कुमार श्रीवास्तव
रायबरेली, भारत

329. अवध धरा
नैसर्गिक सुषमा
साक्षात् स्वर्ग

330. शिला को मिला
प्रभु चरण स्पर्श
अहल्या मुक्ति

331. मेघ गर्जना
इंद्रजीत का धड़
धरती पर

332. राम शर से
रावण मही पर
युद्ध विराम

333. प्रसून वर्षा
सत्य का शंखनाद
मनी दिवाली

ममता उपाध्याय
वाराणसी, भारत

334. कोमल नारी
वन चली काँटों पे
राज दुलारी

335. संत तारन
असुर निकंदन
रघुनंदन

336. था अहंकार
किया कुल विनाश
हारा लंकेश

ममता मिश्रा
नीदरलैंड

337. अशोक तले
सीता नीर बहाए
शोक न जाए

338. तम में दीप
एकाकीपन साथी
त्रिजटा दासी!

339. राम मुद्रिका
बीहड़ में पुष्प सी
सिया हृदय!

340. पूँछ की आग
जला रही है लंका
मारुति लीला

341. बुद्धि फिरते
कौशल्या लगे शत्रु
मंथरा प्यारी!

342. राम सा पुत्र
दशरथ सा भाग्य
किसने पाया?

343. झुलसे नृप
वरदान की अग्नि
कैकेयी छल

माया बंसल
ऑरेंज सीटी, यू.एस.ए.

344. मानव लीला
अद्भुत थी राम की
हर रूप में

345. है महायज्ञ
अखण्ड पारायण
रामायण का

346. अति दुष्कर
भरत सम होना
निस्पृह सदा

347. किष्किन्धा नृप
परस्त्रीगामी बालि
मृत्यु निश्चित

348. शिव बरनी
रामकथा पावनी
सुनी गिरिजा

349. राम कथा है
कलिमल हरणी
भवतरणी

350. पार हुए थे
राम और केवट
अर्थ भिन्न हैं

351. राघव प्रण
करूँ सकल भूमि
असुरहीन

352. रावण दुष्ट
किया पद प्रहार
लघु भ्राता पे

353. राम दयालु
मुक्त किए राक्षस
जन्म मृत्यु से

मारुति ज. कृ. शर्मा
नई दिल्ली, भारत

354. माँयें हर्षित
चारों बालक जब
करें ठिठोली

355. श्री रामराज्य
सकल जगत का
एक ही लक्ष्य

मालिनी त्रिवेदी पाठक
वडोदरा, भारत

356. रघुनंदन
छबि मनभावन
करूँ वंदन

357. धनुषधारी
संगिनी सीता प्यारी
जोड़ी कल्याणी

358. वल्कलधारी
कर वन गमन
ताड़का तारी

359. मर्यादा मूर्ति
लोक कल्याणकारी
रामचन्द्र जी

360. हैं बलिहारी
कर दी सजीवन
अहल्या नारी

361. धर्म पोषक
रावण संहारक
राम रक्षक

362. राम नेह से
जले संस्कार दीप
जग रोशन

मीनाक्षी भाईलाल सोनी
मांडवी, भारत

363. दशरथ से
अधिक भाग्यवान
पक्षी जटायु

364. लक्ष्मण भार्या
निश-दिन जलाती
विरह दीप

365. दृढ़ निश्चय
राम के चरणों में
अंगद पैर

366. अहंकार के
दावानल में जली
सोने की लंका

मीरा ठाकुर
अबु धाबी, यू.ए.ई.

367. चल दी सिया
छोड़ नेह मोह भी
थी निष्कलंक

368. राम लखन
सहे कष्ट अनंत
बने भूषण

मीरा सिंह 'मीरा'
बक्सर, भारत

369. जन्मे ललना
दशरथ अँगना
बाजे बधाई

370. आदर्श राजा
आज्ञाकारी संतान
प्रभु श्रीराम

371. जनकसुता
हैं जो जगजननी
बंधक बनी

मोनिका कपूर
नई दिल्ली, भारत

372. अवध धाम
शोभा अति सुंदर
सरयू नीर

373. कथा अनोखी
कहते जन-जन
राम सिया की

374. सजी अयोध्या
राजतिलक हेतु
हँसी मंथरा

375. छाया प्रकाश
मिट गया नैराश्य
सजी अयोध्या

रंजना माथुर
अजमेर, भारत

376. पुरुषोत्तम
आचरण उत्तम
शांत परम

377. राम बिराजे
शीश मुकुट साजे
बधाई बाजे

378. प्रजा अभय
अवध राम मय
जय हो जय

379. कष्ट निवारे
जन-जन के प्यारे
राम हमारे

380. पुनीत नाम
कण कण में राम
तीरथ धाम

381. है मातु सिया
रघुनन्दन प्रिया
हर्षित हिया

382. रघुनंदन
करूँ सदा वन्दन
दुख भंजन

383. सिया के पति
हैं एक पत्नी व्रती
पावन अति

384. सत्यवाचक
जन जन नायक
प्रजापालक

रचना श्रीवास्तव
लॉस एंजेलिस, यू.एस.ए.

385. राम चरित
महकाये जीवन
पुष्प समान

386. हे कौसलेय
कहे अयोध्या वासी
न जाओ वन

387. पिता की आज्ञा
निःसंकोच निकले
कर्म पथ पे

388. दुखी मैथिली
समायी धरती में
स्वाभिमानिनी

389. संन्यासी राजा
भरत की तरह
होगा न कोई

390. कैकेयी वर
रघुकुल के लिये
थे अभिशाप

391. अकेलापन
बना उर्मिला भाग्य
दर्द की साँझ

राजश्री सुरेश राठी
अकोला, भारत

392. करूँ वंदन
जीवन के आधार
प्रभु श्री राम

393. धैर्य की देवी
देती अग्नि परीक्षा
प्रभु की माया

राजेश कुमार मिश्रा
मुम्बई, भारत

394. रावण दंभ
निश्चित कर गया
लंका विनाश

395. लंका दहन
गहरा संदेश था
हनुमान का

396. कैकेयी माता
भेद किया स्वयं के
प्रिय राम से

397. काम में लिप्त
दिया दशानन ने
मौतामंत्रण

398. कलियुग में
रामायण रूप में
मुक्ति साधन

399. भ्राता लक्ष्मण
नि:स्वार्थ रामभक्त
अतुलनीय

400. राम के प्रति
सीता की प्रेमगाथा
अतुलनीय

राम नेमा 'राज'
भोपाल, भारत

401. ऋतु सुहानी
प्रभु रामनाम की
बारहमासी

402. गंगा में नौका
बड़भागी केवट
पार उतारे

403. स्वीकारे बेर
भीलनी शबरी के
बिना बिचारे

404. पार लगाओ
निज धाम बुलाओ
तारनहारे

राम सिंह 'साद'
मथुरा, भारत

405. राम चरित्र
इतिहास पवित्र
सुन्दर चित्र

406. केवट आस
चरणों में निवास
बड़ा विश्वास

407. मृग मरण
रावण विचरण
सीता हरण

408. औषधि लाए
हनुमत हर्षाए
प्राण बचाए

रेखा नायर
अहमदाबाद, भारत

409. जूठे थे बेर
प्रेम- भक्ति में पगे
मिठास बढ़ी

410. राम केवट
दोनों बने खेवैया
जीवन नैया

रेखा शर्मा
बूँदी, भारत

411. श्री रामचंद्र
धीरोदात्त नायक
लोक पूजित

412. भाई लखन
सस्नेह समर्पण
उदाहरण

413. राजदुलारी
जानकी पिया प्यारी
ममतामयी

414. स्वागतोत्सुक
अलंकृता वधू सी
अवधपुरी

415. वनगमन
आहत दशरथ
प्राण विलग

416. भ्राता भरत
संतप्त विचलित
राम विछोह

रोहित कुमार मिश्रा
लुधियाना, भारत

417. कोसल राज
नरेश दशरथ
इक्ष्वाकु वंश

418. पुत्री वैदेही
स्वयंवर संपन्न
झूमे मिथिला

419. सीता हरण
पंपापुर गमन
सुग्रीव भेंट

420. रावण वध
धर्म की जयकार
विजयी राम

वनिता शर्मा
दिल्ली, भारत

421. संतन हित
मनुज अवतारी
जन्मे भूलोका

422. शुभ मंगल
अमंगल हरण
श्रीराम कृपा

वसुमति चतुर्वेदी
इंदौर, भारत

423. कैकेयी रूठी
भूमि पड़े भूपति
हो शोकाकुल

424. जनकसुता
कठिन मग चली
महलों पली

425. विरह तपी
पति वचन हित
वधू उर्मिला

विद्या चौहान
फरीदाबाद, भारत

426. राम की दशा
वचनों ने बदली
जीवन दिशा

427. सदैव चली
मर्यादा पथ पर
राम की नीति

428. जड़ अहल्या
उनींदी थी चेतना
राम जगाये

429. आस टोकरी
प्रेम का फल लिये
शबरी बैठी

430. मन के अश्व
स्वर्ण मृग के पीछे
दौड़ लगाते

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

431. मैं बजरंगी
राम रंग में रँगा
मैं मनरंगी

432. वीणा मन की
झंकृत सारे तार
धुन राम की

433. चेतन राम
जीव शरणागत
हुआ मगन

434. सूर्य का वंश
चंद्रमुख शीतल
ब्रह्म का अंश

435. राम की मीता
वेधी दुर्गम लंका
जय माँ सीता

436. काठ की नाव
अद्भुत तेरे पाँव
दे पखारन

437. राम की कथा
शिव मानस बसी
बही धार सी

विनोद वर्मा 'दुर्गेश'
भिवानी, भारत

438. भोर की बेला
बाग में खड़ी सीता
निहारे राम

439. टूटा धनुष
पुलकित जनक
हर्षित सीता

440. पिता की आज्ञा
वन को गए राम
प्रजा विकल

विभा रश्मि
गुरुग्राम, भारत

441. धो कर पाँव
केवट करे पान
दिया सम्मान

442. राम चरित
सीखूँ कर्त्तव्यनिष्ठा
धर्म प्रतिष्ठा

443. जलधि सेतु
कपि बल निर्मित
प्रयाण हेतु

विभा रानी श्रीवास्तव
पटना, भारत

444. राम जानकी
बगिया में मिलन
अद्भुत प्रेम

विभावरी उदय लेले
वडोदरा, भारत

445. पवनपुत्र
सुज्ञ गुणनायक
प्रिय श्री राम

446. साधु वेष में
लंकेश दशानन
माँगता भिक्षा

विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत, भारत

447. राम का नाम
जो जपता है प्राणी
पाता विश्राम

448. श्रद्धा–विश्वास
सर्वदा अहर्निश
प्रभु आभास

वीना आडवाणी तन्वी
नागपुर, भारत

449. डूब भक्ति में
राम-राम रटते
हनुमान जी

450. पिता वचन
राम बढ़ाए मान
कर्त्तव्य निभा

451. सिखाते राम
मर्यादा जीवन की
सीखा क्या कोई?

वीरेंद्र आज़म
सहारनपुर, भारत

452. करारी चोट
रावण दंभ पर
अंगद पाँव

453. पत्थरों से ना
राम-कृपा से बना
समुद्र-सेतु!

शशि सक्सेना
कोटा, भारत

454. नैनों से झड़ी
उर्मिला रोके खड़ी
वचनबद्ध

455. अधर्म हारा
बड़ा उदाहरण
मृत रावण

शार्दुला नोगजा
सिंगापुर

456. हा! हनुमंत!
व्यथा जाने हृदय
है सीता संग!

457. ऋष्यमूक पे
जीवन ऋतु व्याख्या
राम-लखन!

458. शोक में धैर्य
जानकी ही जानती
बेटी धरा की!

459. अश्रु पावन
प्रार्थना के पुष्प हैं
स्वीकारो राम!

शिखा सक्सेना
लखनऊ, भारत

460. दशरथ के
सुत ये चार प्यारे
माएँ निहारें

461. राम चरण
अहल्या का उद्धार
है मुक्ति द्वार

462. मारीच छल
स्वर्ण मृग का रूप
सीता हरण

463. रावण वध
अधर्म का संहार
भयमुक्त भू

शिवप्रकाश अग्रवाल
वडोदरा, भारत

464. चले राम जी
संग वानर सेना
लेने सीता को

शिवेंद्र कुमार श्रीवास्तव
रायबरेली, भारत

465. नवमी तिथि
राम अवतरित
मध्य दिवस

466. धनुष भंग
जनकसुता संग
पाणिग्रहण

467. अवधपुरी
राजतिलक चर्चा
रुष्ट कैकेयी

शैल अग्रवाल
बर्मिंघम, यू.के.

468. मन भिगोता
नेह स्वाद सम्पूर्ण
शबरी प्रेम

469. सुरसा मुख
रोज ही तो जीवन
एक परीक्षा

470. भक्ति की शक्ति
बजरंगी सिखाते
सेवक धर्म

471. राजा भरत
है सिंहासन पर
राम पादुका

472. संकल्पबद्ध
नहीं सोये लखन
चौदह वर्ष

473. भेदी हो भाई
मरता है रावण
शत्रु के हाथ

474. पिया बावरी
वन वन भटकी
सिया दुलारी

475. छल ही लेता
विवेक हर लेता
सोने का मृग

476. रिश्तों का मर्म
है आचार संहिता
राम कहानी

श्याम बहादुर श्रीवास्तव
उरई जालौन, भारत

477. लोकाभिराम
पुरुषोत्तम राम!
मम प्रणाम

478. तारी अहल्या
शबरी-बेर खाये
सस्वाद राम

479. लगाया गले
केवट-जटायु को
धन्य श्रीराम!

480. राम के जैसी
माँ, गुरु, सन्त-सेवा
सिखाता कौन!

481. राम चरित
जन कल्याणकारी
आपदाहारी

482. जानकीनाथ
सकल गुणधाम
जय श्रीराम!

संगीता अग्रवाल
अहमदाबाद, भारत

483. वैभव में भी
मांडवी तपस्विनी
विरह अग्नि

484. गुरु आदेश
धनुष के टुकड़े
शुभविवाह

485. विधि का खेल
पुत्र बने संन्यासी
जग कल्याण

486. क्षण भर में
पादुका करे राज
मुकुट बन

487. बनी कुमाता
रावण वध हेतु
सहा कलंक

488. राजतिलक
समय बलवान
वनगमन

489. मिथ्या संसार
अस्तित्व पहचान
सत्य है राम

490. राघव जन्म
अवध में उत्सव
देव हर्षित

491. चरण रज
अहल्या का उद्धार
कृपानिधान

492. रामसेतु है
अमर प्रेम स्मृति
रामेश्वरम

493. वह था ज्ञानी
रावण अभिमानी
नाश निश्चित

संतोष कुमारी 'संप्रीति'
नई दिल्ली, भारत

494. वचन प्रीत
रघुकुल की रीत
सिखाती जीत

495. वक्त का फेर
सुन शबरी टेर
खाए थे बेर

496. वन गमन
चित्रकूट भवन
पर्ण शयन

संतोष भाऊवाला
बेंगलुरु, भारत

497. मोक्ष का द्वार
संस्कारों का सृजन
है राम कथा

498. है राम नाम
रामबाण कवच
पीड़ा-नाशक

499. दे जूठे बेर
शबरी चखकर
कृतज्ञ राम

500. सोने की लंका
स्त्री के लिए बंधन
हर युग में

संदीप पांडे 'शिष्य'
अजमेर, भारत

501. शीतल नैन
पुरुषोत्तम मन
दिव्य समान

502. धर्म अडिग
कष्ट अविचलित
सत्य विधान

503. युग बदले
रघुनन्दन सम
न कोई धाम

504. हे अगोचर!
मानव रूप धरे
भव तारण

505. शस्त्र निपुण
हैं शास्त्र परिपूर्ण
सीतारमण

सरिता सुराणा
हैदराबाद, भारत

506. राम नाम की
महिमा है अद्भुत
पत्थर तिरे

507. राम को मिला
कठोर वनवास
कैकेयी खुश

508. राम लक्ष्मण
चले वन की ओर
सीता के साथ

509. सीता हरण
वन-वन भटके
राम लखन

510. जटायु पक्षी
अमर बलिदानी
इतिहास में

511. वानर सेना
रामसेतु निर्माण
कार्य महान

सरोज अग्रवाल
डेटन, यू.एस.ए.

512. हे राघवेंद्र!
अखिल विश्वाधार
जीवन प्राण

513. समुद्र पार
स्वर्ण लंका प्रजारी
पवन पुत्र

514. गौरी पूजन
पति मनभावन
पाया सिया ने

515. मृदुल राम
छल छंद से परे
दया सागर

516. मुदित मना
राक्षस संहारक
अंजनी लाल

517. कृपानिधान
करुणा सिंधु राम
शरणागत

518. सुवर्ण मृग
चंचल अभिराम
बना संकट

सावित्री शर्मा 'सवि'
देहरादून, भारत

519. चैत्र मास में
शुक्ल पक्ष नवमी
प्रकटे राम

520. कृपा निधान
जन मन नायक
भक्त वत्सल

521. दृढ़ प्रतिज्ञ
किया वन गमन
बने आदर्श

सी. कामेश्वरी
हैदराबाद, भारत

522. श्री रामचन्द्र
सिरमौर हुए हैं
सूर्यवंश के!

523. माता-पिता के
हृदय-तल पैठे
श्री रामलला

524. अयोध्यापुरी
कीन्हीं पावन राम
स्वर्ग समान!

525. असुरों ने भी
पाया परम पद
सुर समान!

सीमा जोशी मूथा
जोधपुर, भारत

526. राम का नाम
आधार जगत का
इसी में सार

सीमा शर्मा
नई दिल्ली, भारत

527. शुभ पंचमी
रचा है स्वयंवर
हर्षित सिया

528. वैदेही हिय
है प्रभु अवतारी
और न कोई

529. पुत्री बिछोह
है दुख अति भारी
सूना आँगन

530. धरित्री सिया
अरण्य में व्याकुल
मन-विमुख

सुनीता गहलोट
दिल्ली, भारत

531. सिया सहित
मम हृदय बसो
हे रघुराई!

सुनीता पाहूजा
मॉरीशस

532. सगुण रूपी
चाहे निर्गुण राम
पार उतारें

533. ताप मिटाता
दैहिक व दैविक
राम का नाम

534. आदर्श, मूल्य,
आध्यात्मिक चेतना
मानस सार

535. रघुनंदन
विष्णु के अवतार
मन में धार

536. उदात्ततम
लोक कल्याणकारी
मानस कथा

सुनीता यादव
न्यू पनवेल, भारत

537. खींच ही लाई
शबरी की प्रार्थना
प्रभु राम को!

538. राम में आस्था
तिनके के सहारे
रक्षित सीता

539. आज भी जिंदा
मंथरा विषबेल
फैलाए विष

540. सिखाए भक्ति
जग को हनुमान
मन में राम

541. मर्यादा में ही
जीवन का सौंदर्य
पाते श्रीराम

सुभाषिनी शर्मा
गाज़ियाबाद, भारत

542. राम भरत
है अद्भुत चरित्र
भातृ प्रेम का

543. नयन जल
चरण प्रक्षालन
केवट करे

544. वल्कल धारे
त्यागे राजसी सुख
वचन रक्षा

सुमन लता
हैदराबाद, भारत

545. सेतु बंधन
रावण का हनन
नेह पालन!

546. कोदण्डपाणि
वन में विचरण
धर्माचरण!

547. यज्ञ की रक्षा
धर्म पथ की शिक्षा
सत्य की दीक्षा!

सुरंगमा यादव
लखनऊ, भारत

548. हरती त्रास
रामायण की कथा
भवतारिणी

549. शिव ने बाँची
स्वयं राम की कथा
उमा समक्ष

550. जहाँ भी होती
कथा रामायण की
हनु विराजें

551. राम-वियोग
सह न सके नृप
प्राणों का भार

552. हठी रावण
अहं ने कर लिये
प्राण हरण

553. मनुज रूप
राम-सिया ने सही
तपन-धूप

554. विनीत राम
भय बिन न छूटा
सिन्धु का मान

555. तृण सहारा
सिया के संकल्प से
लंकेश हारा

556. हुई अशोक
अशोक तले सीता
देख मुद्रिका

557. व्यथित सिया
भू का आह्वान कर
विश्राम लिया

सुरभि दत्त
हैदराबाद, भारत

558. परम काव्य
वाल्मीकि रामायण
श्रवण योग्य

559. सूर्य वंशज
वचननिष्ठ राम
धर्म धारक

560. यज्ञ रक्षक
जगत उद्धारक
प्रतापी राम

561. अंजनी पुत्र
हनुमान हृदय
विराजे राम

सूर्य करण सोनी 'सरोज'
बाँसवाड़ा, भारत

562. दुख दे गई
दशरथ को प्यारी
रानी कैकेयी

563. सिंधु अपार
क्षण में हनुमान
हो गए पार

564. भक्ति का बल
शबरी ने खिलाये
चख के फल

565. धर्म निभाया
पुरुषोत्तम पद
तब था पाया

सोनम यादव
गाज़ियाबाद, भारत

566. भक्ति हरण
आसुरी शक्ति करे
पंचवटी से

567. माया मृग ले
तृष्णा है भटकाती
मन जानकी

568. मन चिंतन
जटायु सा प्रयास
हरण रोके

569. स्वर्ण आकांक्षा
दूर करे ईश्वर
सब से राम

570. मारीच मन
वन-वन भटके
माया के सँग

571. कामुक मन
सदा तोड़े मर्यादा
सूर्पनखा सा

572. रखे रक्षित
जीवन में संयम
लक्ष्मण रेखा

सोना अग्रवाल
टोंक, भारत

573. है मनोरम
है पावन अत्यंत
श्री राम कथा

574. प्रकटे राम
अयोध्या के दुलारे
कृपानिधान

575. पाकर धन्य
कौशल्या महतारी
अँगना राम

576. तारणहार
शिला बना दी नारी
जय श्री राम

577. जनक सुता
देखती मनोहर
श्री राम छवि

578. शिव धनुष
करें भंग श्री राम
सीता को पायें

579. अयोध्या सजी
राज तिलक हेतु
कैकेयी रुष्ट

580. राम को वन
भरत को तिलक
चाहिए वर

581. राम वियोग
दशरथ मरण
अयोध्या त्रस्त

स्वीटी सिंघल 'सखी'
बेंगलुरु, भारत

582. भाग्यशाली भू
हुए अवतरित
श्री राम प्रभु

583. सहर्ष त्याग
स्वीकार वनवास
द्वेष न राग

584. निश्छल नेह
उमड़ती ममता
जूठे बेरों में

585. वे सर्वज्ञाता
पूछें पात-पुष्प से
सिया का पता

586. श्रीराम दूत
प्रभु नाम का डंका
धधके लंका

587. तैरें पाषाण
भव पार उतारे
राम का नाम

588. रेत लपेटे
कहती गिलहरी
सेवक मैं भी

द्वितीय खण्ड: प्रासंगिक हाइकु

राम कथा

रेणु चन्द्रा माथुर
फ्रीमॉन्ट, यू.एस.ए.

589. श्री राम कथा
पुण्य फल दायिनी
आनन्द गाथा

590. राम स्वरूप
विष्णु हैं अवतारे
शिव निहारें

591. कौशल्या सुत
दशरथ नंदन
अवध लला

592. मनभावन
अति पावन नाम
देता विश्राम

593. ताड़का मारी
गौतम नारी तारी
गए मिथिला

594. सीता निहारी
किया धनुष भंग
ब्याहे वैदेही

595. पिता वचन
चले राम वन को
सुख है त्यागा

596. वन गमन
सिया राम लक्ष्मण
तप जीवन

597. कर्त्तव्य प्रेम
मिसाल हैं लक्ष्मण
प्रहरी बने

598. रख दो पाँव
पार लगाओ नाव
मेरी श्री राम

599. भरत व्यथा
चौदह बरस की
अजब कथा

600. बाट जोहती
शबरी करे आस
राम पधारे

601. सीता हरण
गीधराज मरण
दुष्ट रावण

602. पवनपुत्र
मिले जनकसुता
लाए संदेश

603. राम नाम के
छोटे-छोटे पत्थर
पार उतारें

604. हुआ भीषण
राम-रावण युद्ध
व्यथित राम

605. विभीषण ने
खोला राज़ गहरा
रावण मरा

606. लौट अवध
सिंहासन बिराजे
जय श्री राम

राम की यात्रा

रश्मि वार्ष्णेय
मुम्बई, भारत

607. राम लक्ष्मण
दशरथ के रत्न
ऋषि ले चले

608. जनक न्यौता
विश्वामित्र ले चले
द्वय कुमार

609. राम न भूले
जाते-जाते मिथिला
तारी अहल्या

610. मिथिला छोड़
राम की हो जानकी
अयोध्या चली

611. प्रण से बँधे
राम वन को चले
दुखी अयोध्या

612. सुमंत्र-रथ
व्यथित हृदय से
वन को चला

613. केवट माँगे
नाव की उतराई
पाँव पखार

614. वाल्मीकि चुनें
चित्रकूट पर्वत
राम के लिए

615. भरत चले
सौंपने राजपाट
राम के पास

616. भरत लौटे
पादुका धरे शीश
नंदीग्राम में

617. वन में राम
पहुँचे पंचवटी
बसाया घर

618. मृग का मोह
लंका ले जाए सीता
राम से दूर

619. मृग से राम
वन-वन में ढूँढ़ें
सीता कस्तूरी

620. शबरी बेर
राह तके राम की
हो राममय

621. ऋष्यमूक पे
दो कुँवर भटकें
सुग्रीव डरे

622. सीता खोजने
कपि छलाँग भरें
लंका पहुँचे

623. सिंधु पछाड़
सेतुबंध पे चली
राम की सेना

624. नभ मार्ग से
आ के विभीषण ने
बाज़ी पलटी

625. क्षत लक्ष्मण
कपि हिमाद्रि गये
गिरि ले आये

626. अयोध्या लौटे
पुष्पक में राघव
यात्रा सम्पूर्ण

बालकांड

नीना छिब्बर
जोधपुर, भारत

627. वंदे गणेश
सुत गौरी महेश
कष्ट हों दूर

628. पार्वती प्रिय
दीनदयालु शिव
हरो संताप

629. कर प्रणाम
शिव शारदा गंगा
लिख ले कथा

630. धन्य अयोध्या
जन्मे विष्णु स्वरूपा
राम है नाम

631. अवधपुरी
हर्षित सूर्यवंश
छाया आनंद

632. गुरु वसिष्ठ
करें नामकरण
श्री रामचन्द्र

633. भ्राता सहित
विश्वामित्र के सँग
वन गमन

634. धनुषयज्ञ
पूर्ण जनक प्रण
सीता रमण

635. लौटे अवध
हर्षित नर-नारी
महिमा भारी

636. ये बालकांड
राघव बाल-लीला
है प्रेम-पगी

पुत्र-कामेष्टि यज्ञ

रीता पाण्डेय
सिंगापुर

637. संकट खड़ा
दशरथ समक्ष
वंश वृद्धि का

638. समझी व्यथा
गुरु वशिष्ठ जी ने
बताई युक्ति

639. बन याचक
द्वार श्रृंगी ऋषि के
पहुँचे राजा

640. मनःस्थिति भी
भाँपी ऋषिवर ने
दिव्य दृष्टि से

641. दशरथ को
अनुमति यज्ञ की
दे दी तत्क्षण

642. यज्ञ सम्पूर्ण
अभीष्ट वरदान
संतान प्राप्त

643. जन्मे श्री राम
भरत व लक्ष्मण
तथा शत्रुघ्न

644. छाया सर्वत्र
आनंद ही आनंद
भाग्य जो जागा

645. मनोकामना
पूर्ण अवधेश की
धन्य जीवन

646. बालक-रूप
छवि देख कौशल्या
हुईं हर्षित

राम बालकाल्य

अर्चना प्रकाश

लखनऊ, भारत

647. प्रकटे राम
हर्षित महतारी
रूप विराट

648. विहँसे राम
देखि माई हर्षित
रूप अखंड

649. बाजै बधाई
दशरथ अँगना
हर्ष अपार

650. नवमी तिथि
चैत्र माह में प्रभु
प्रकटे धरा

651. राम दरश
ब्रह्मा विष्णु महेश
धावै अवध

652. झूलै पालना
चारिउ ललनवा
सुख असीम

653. कमल नेत्र
पीताम्बर वसन
चलै ठुमुकि

654. पग पैंजनी
बाजत रुन-झुन
रामलला की

655. गिरैं भू पर
रोवत अँसुवन
धावै कौसल्या

656. तोतरि बोली
बोले जब ललना
अति आनंद

657. माखन रोटी
प्रभु हथेलिन से
लै गयो कागा

658. करें भोजन
भागै किलकै प्रभु
गोद लें नृप

659. धूल धूसर
राम खेलि के आवै
गोद ले पिता

660. उठते प्रातः
मातु पितु गुरुहि
शीश नवावै

661. वेदन ज्ञाता
वेद नित पढ़ते
लीला प्रभु की

662. अनुज संग
करै मृग आखेट
देखावै पिता

663. कर में बाण
धनुष धरे काँधे
रूप विशाल

664. बाल चरित
बहुविधि देखि कै
दास हुलसै

धनुष यज्ञ

मुक्ता श्रीवास्तव
रायबरेली, भारत

665. स्वयंवर में
गुरु के सँग आये
राम लखन

666. किये प्रयास
सभी देशों के राजा
हुये निष्फल

667. माता विकल
करें इष्ट प्रार्थना
नयन अश्रु

668. दुःखी जनक
विश्वामित्र की दृष्टि
राम की ओर

669. गुरु की आज्ञा
शरासन की ओर
श्रीराम चले

670. मंद मुस्कान
श्रीराम के हाथ में
शिव धनुष

671. खंडित हुआ
शिव जी का धनुष
गूंजी टंकार

672. सिया के नैन
निहारते राम को
हर्ष के क्षण

673. सीता ने डाली
राम के गले माला
फूलों की वर्षा

674. सभा के मध्य
क्रोधित हो प्रकटे
परशुराम

675. जनक चिंता
भृगुपति का रोष
सौमित्र हठ

676. राम को देख
भार्गव हुए शांत
शून्य में बाण

677. दिया आशीष
जानकी राघव को
किया प्रस्थान

678. झूमी आयोध्या
जनक निमंत्रण
विवाहोत्सव

679. जनक द्वार
बारात आगमन
महल सजा

680. जनकपुर
राम जानकी सँग
शुभ विवाह

681. सीता का रूप
कोटिकाम लज्जित
अद्भुत दृश्य

682. असीम ख़ुशी
जनक नैन अश्रु
सीता विदाई

धनुष भंग

माया बंसल
ऑरेंज सीटी, यू.एस.ए.

683. जनक प्रण
जो तोड़े शिव धनु
वर ले सीता

684. सजी हुई है
धनुष यज्ञशाला
बहु नृपों से

685. विश्वामित्र जी
राम लखन संग
यज्ञ पधारे

686. नृप बैठारे
मुनि संग द्वौ भ्राता
श्रेष्ठ मंच पे

687. जनकराज
जानकी बुलवायीं
शोभा की खान

688. हारे सकल
रावण सम योद्धा
बैठे उदास

689. गुरु आज्ञा से
चले हैं राम उठ
मंथर गति

690. सिय चिंतित
राम हैं मृदुगात
धनु विशाल

691. राम विलोके
चिंता में सब लोग
सीय बिकल

692. मन ही मन
कर गुरु प्रणाम
धनु उठाया

693. छुअत राम
हुआ धनुभंजन
हर्ष अपार

694. लजा के सिया
पहनायें राम को
श्री जयमाल

695. नभ से सुर
बरसावें सुमन
करहिं गान

696. परशुराम
सुनि धनु टंकार
आये सभा में

697. कीन्ह प्रणाम
सीय संग जनक
मुनि द्वौ भाई

698. परशुराम
देखे जो चापखण्ड
भये क्रोधित

699. लखन दीन्ह
उपालम्भ बहुत
क्रोधी मुनि को

700. विनय करी
बहुविध राम ने
तो मुनि शांत

701. ज्यों मुनि जाने
राम हैं भगवान
करें वंदन

702. बरसैं पुष्प
देव देते दुन्दुभि
हरषे सभी

सिया वरण

नीलम वर्मा
नई दिल्ली, भारत

703. पुष्पवाटिका
वैदेही पग रोके
राम विलोके

704. माँ गौरी अम्बे
कीजिए कृपादृष्टि
आनंद वृष्टि

705. पिनाक उठा
रघुकल नंदन
धनु भंजन

706. सुमन वर्षा
करते देवगण
सिया वरण

707. रंग में भंग
भूपति करें क्लेश
कटु आवेश

708. परशुराम
धारे रूप कराल
नेत्रों में ज्वाल

709. पूछते प्रश्न
कौन यहाँ उद्दंड?
दूँ अभी दंड!'

710. लक्ष्मण वीर
बिजली से कड़के
ऋषि भड़के

711. विनम्र राम
बालसुलभ वाणी
भाषा कल्याणी

712. उतरा रोष
शीतल ऋषि मन
आशीर्वचन

राम विवाह

अर्चना प्रकाश

लखनऊ, भारत

713. पीत वसन
परिकर कटिहि
हाथन चाप

714. मिलहि इहै
बरु जानकिहि तौ
नहि सन्देह

715. गे दोऊ भाई
जहाँ स्वयम्वर भा
सजा पंडाल

716. राम दरस
सब भये सुखारे
हर्षे जनक

717. मंचन महि
मंच भव्य बिसाल
बैठे श्री राम

718. सखिन्ह संग
चली सिया हाथन
लै वरमाला

719. नृप अनेक
आये धनु भंग का
हिला न पावैं

720. कर प्रणाम
चाप चढ़ावै राम
खंडित धनु

721. ब्रह्मादिदेव
सुमन बरसावैं
देहि असीस

722. जानकी डारैं
राम कंठ जैमाल
पुष्प बरसैं

723. पहुँचे दूत
अवध नगरिया
दीन्हि संदेसा

724. सभा समेत
नृप भये हर्षित
अति उल्लास

725. दशरथ दें
निछावर दूतहि
खुसी अपार

726. जनक पत्र
सुनि तीनिउ रानी
भई मगन

727. नगर बहि
रथ में दसरथ
चली बारात

728. जनकपुरी
आई सिय बारात
गे जनवासे

729. राम कुँवर
गए उहि मंडप
बैदेही ब्याहे

730. जनक अरु
दसरथ हुलसै
बने समधी

731. थाल आरती
लिए तीनिउ माई
परछै वधू

732. गावै जो जन
राम-जानकी ब्याह
आनंद पावै

कैकेयी प्रसंग

लता अग्रवाल 'तुलजा'
भोपाल, भारत

733. अवधपुरी
सरयू तट पर
धर्म की धुरी

734. वृद्ध अवस्था
सोचें अवधपति
राम हों राजा

735. राजतिलक
सब हुई तैयारी
प्रसन्न सब

736. दो वरदान
दशरथ से माँगे
रानी कैकेयी

737. भरत-राज
राम को वनवास
चौदह वर्ष

738. तपस्वी वेश
राम सिया लखन
वन में वास

739. हा! आत्मघाती
पुत्र-विश्वास खोया
पति मरण

740. सीता हरण
करे दुष्ट रावण
दोषी कैकेयी?

741. राम कथन
वंदनीय कैकेयी
करो न निंदा!

दो वरदान

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

742. कुटिल चाल
षड्यंत्र साधना
वर माँगना

743. ग्रहण लगा
राज्याभिषेक रुका
तिमिर छाया

744. कवलीकृत
सौभाग्य सुमंगल
बाधित गति

745. त्रिया चरित्र
शत्रु समान मित्र
धूमिल चित्र

746. कैसी विपदा?
टूट गया सपना
मंगल रूठा

747. भाग्यविधाता
माता हुई कुमाता
वन को भेजा!

748. अधीर पिता
जल बिन मछली
अटकी साँसे

749. सजल नेत्र
कातर हुई दृष्टि
दुर्भाग्य वृष्टि

750. करे याचना
शक्तिशाली राजन
कैसा पतन?

751. हाय! मंथरा
सर्प-सा डस लिया
फूँका गरल

752. शब्द प्रत्यंचा
की कुटिल मंत्रणा
किया आघात

753. पुत्र वियोग
टूटी साँसों की डोर
अभागा पिता

754. कड़ी परीक्षा
विकृत ग्रह-दशा
गहन व्यथा

755. हाय रे! भाग्य
वचन विवशता
माया ने ठगा

756. फ़र्ज़ की धुरी
बनती मजबूरी
जीवन यही

757. त्याग प्राणों को
वचन था निभाया
वंश मर्यादा

758. वन गमन
मर्यादा को नमन
रघुकुल का

759. बीतीं सदियाँ
ऐसा उदाहरण
मिलता कहाँ?

760. मिला न कभी
दशरथ सा पिता
पुत्र राम सा

761. धन्य थे राम
धन्य थे दशरथ
नमन सदा

राम वनवास

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

762. राज्याभिषेक
था राम का निश्चित
देव चिंतित

763. किया उपाय
भ्रष्ट कैकेयी मति
बनी नियति

764. विपत्ति काले
मंथरा लगी प्यारी
बुद्धि की मारी

765. भरत राजा
राम को वनवास
माँगा विनाश

766. बिना विचारे
दशरथ का वर
बना ज़हर

767. अटूट साथ
सिया लखन राम
छोड़ी अयोध्या

768. पुत्र वियोग
पिता पीड़ा अनंत
हुए प्राणान्त

769. कुटिल चाल
विदित परिणाम
बुरा सर्वदा

770. कैकेयी बनी
अनर्थ का कारण
क्या निवारण?

771. भरत चले
रघुवर लौटाने
हा! वे न माने

772. राम न लौटे
अयोध्या हुई सूनी
टले न होनी

773. राज्य सँभाला
प्रतिनिधि राम के
भरत बने

774. करें प्रतीक्षा
भरत तपस्वी से
कर्त्तव्य बँधे

775. हैं चारों भ्राता
उत्कृष्ट उद्धरण
त्याग प्रेम का

776. विधि ने रचा
विशेष प्रयोजन
वन गमन

777. राम के हाथों
भक्तों का बेड़ा पार
पापी संहार

778. हुआ सार्थक
वनवास उद्देश्य
दुष्ट न शेष

779. पधारे राम
जग कल्याण हेतु
विधि विधान

पुत्र वियोग

प्रेमलता माहेश्वरी
लुधियाना, भारत

780. श्रवण चला
लेकर माता-पिता
तीर्थ कराने

781. अवध भूप
हो गयी आखेट में
श्रवण मृत्यु

782. पश्चाताप में
मात-पिता के पास
गये ले पानी

783. पुत्र वियोग
श्राप दिया राजा को
मृत्यु निश्चित

784. राजा चिंतित
सहमे बारम्बार
श्राप स्मरण

785. पुत्र नहीं थे
गये गुरु शरण
युक्ति बताओ

786. गुरु बतायें
पुत्रकामेष्टि यज्ञ
कीजै नरेश

787. राजा प्रसन्न
चारों पुत्र निहार
जन्म सफल

788. नामकरण
बाल चरित्र लीला
शिक्षा ग्रहण

789. किया विवाह
वधुएँ आयीं घर
अति उल्लास

790. गुरु बुलाये
करें राजतिलक
राम का आज

791. मंथरा दासी
गयी कैकई पास
माँग लो वर

792. कोपभवन
दशरथ व्याकुल
लिया वचन

793. त्रिया चरित्र
राम को वनवास
भरत राज्य

794. वचनबद्ध
न कर सके मना
बुलाये राम

795. विकल नृप
राम राम रटत
भये अचेत

796. मोहि कहो माँ
तात दुःख कारण
आज्ञा पालन

797. राम लखन
सिया सहित धरा
साधु का वेश

798. वन गमन
सुमंत्र आये छोड़
गंगा के पास

799. राजा विलाप
कहते राम-राम
तजा शरीर

उर्मिला प्रसंग

रीता पाण्डेय

सिंगापुर

800. सुनैना प्यारी
जनक की दुलारी
दिव्य किशोरी

801. नाम उर्मिला
परिणय में बँधी
लक्ष्मण सँग

802. सिया अनुजा
लक्ष्मण प्रति प्रेम
आयीं अयोध्या

803. विधाता खेल
नियति दी पलट
पीड़ा अनंत

804. विकट क्षण
पति वन गमन
द्रवित मन

805. वचनबद्ध
रही खड़ी निःशब्द
असह्य कष्ट

806. कोमल कंधे
नवयौवना नारी
दायित्व भारी

807. परीक्षा घड़ी
मुश्किल आन पड़ी
मर्यादा बड़ी

808. दृढ़ संकल्प
पतिव्रता का तप
मिटा संताप

809. पति की आज्ञा
शिरोधार्य कर ली
लक्ष्मणप्रिय

810. सेवा भ्राता की
करें लखन सदा
बन प्रहरी

811. नेत्र बोझिल
निद्रा अडिग खड़ी
व्यग्र लक्ष्मण

812. सौमित्र तब
वरदान माँगते
निद्रा देवी से

813. तत्क्षण देवी
उर्मिला-द्वार चलीं
कह तथास्तु

814. चौदह वर्ष
रहीं निद्रा में लीन
भार्या उर्मिला

815. विरह ज्वाला
धधकती भीतर
तपी उर्मिला

816. श्रेष्ठ उर्मिला
कर देवी सा काम
बनी महान

केवट प्रसंग

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

817. राम खड़े हैं
सुरसरि किनारे
केवट आ रे!

818. पार करा दे
नदिया ओ मितवा!
राम पुकारे

819. काठ की नाव
तेरे जादू से पाँव
जी घबरावे

820. स्त्री बने नाव
छूटे मोरा आधार
जाऊँ न पार

821. राम कृपालु
भगत पहिचाने
मन मुस्काने

822. पाँव पखार
औ आरती उतार
की गंगा पार

823. भवसागर
प्रेम जल गागर
होवे उद्धार

शूर्पणखा-रावण संवाद

दिव्या शर्मा
गुडगांव, भारत

824. नाक कटी तो
क्रोधित शूर्पणखा
लंका पहुँची

825. हे दशानन
सम्मान बहन का
वापस लाओ

826. कहो बहन!
कौन है दुस्साहसी
मृत्यु-मुख में

827. पंचवटी में
राम और लखन
सीता के संग

828. हैं वे मायावी
खरदूषण को भी
मार है डाला

829. रावण चला
रथ पर चढ़ के
पंचवटी को

830. चाल कुटिल
सोचकर रावण
मारीच संग

831. हरि हैं राम
रावण नहीं जाने
काल बुलाये

सीता हरण

वीणा पाठक
इंदौर, भारत

832. सीता हरण
कार्य और कारण
स्वर्ण का मृग

833. निकल पड़े
रघुकुल तिलक
रचने लीला

834. दिखा दिया था
सुनहरा हिरण
माता सीता को

835. भ्रम का जाल
मुदित था मारीच
छल-बल से

836. छली का रूप
जानकर अज्ञानी
प्रभु श्री राम

837. राम की चीख
लक्ष्मण को पुकारा
वन में गूँज

838. कातर सीता
किंकर्त्तव्यविमूढ़
निश्चिंत भ्राता

839. वचनबद्ध
सुमित्रा का नंदन
अग्नि की रेखा

840. दशानन ने
तुरंत धरा वेश
बना संन्यासी

841. कुटिया देख
भिक्षा की रखी माँग
सीता सम्मुख

842. लेकर दान
आई जनक सुता
छली के आगे

843. भगवा वेश
जान न पायी सीता
छद्म रूप को

844. भिक्षा तो दे दो
दुष्ट का था आह्वान
विधि की लीला

845. लक्ष्मण रेखा
उल्लंघन अनर्थ
सीता विवश

846. लाँघ ली रेखा
सीता सरल नारी
फँसी छल से

847. दशानन ने
दिखाया खरा रूप
मैं हूँ लंकेश

848. सिया ने कहा
मेरी इच्छा करके
मृत्यु को माँगा

849. क्रुद्ध लंकेश
पकड़ लिया हाथ
हाँका रथ को

850. आकाश-मार्ग
जानकी का विलाप
अति करुण!

851. पछतावा था
थे लखन निर्दोष
अक्षम्य हूँ मैं!

शबरी भेंट

नीलिमा तिग्गा
अजमेर, भारत

852. मतंग ऋषि
आश्रम पर्णकुटी
सेवा श्रमणी

853. श्रमणा सिद्धा
तपस्विनी शबरी
अद्भुत नारी

854. उत्कट आस
राम दर्शन प्यास
शुचिता भक्ति

855. बेला पावन
राघव आगमन
उजास मन

856. तेजस रूप
शिरोभूषण जटा
यथा मुकुटा

857. सुस्वागतम्
चरण प्रक्षालन
हर्षित मन

858. राम दर्शन
प्रतीक्षित जीवन
वयोवृद्धता

859. प्रभु आशीष
प्रेमभाव सर्वांग
नवधा भक्ति

860. जन मानस
भगवद्भक्ति भाव
नाश तमस

861. वचन अर्थ
हरिपदलीनता
भक्ति लक्षण

862. जीवन व्रत
अभिमान रहित
सेवा सफल

863. दृढ़ विश्वास
भगवंत मंत्रणा
प्रभु चरणा

864. परमानंद
ईश चरण लीन
सर्व साधन

865. भक्ति संवाद
व्याख्या प्रतिपादित
नवधा भक्ति

866. पवित्र नारी
भक्तिमय जीवन
प्रभु उद्धारी

शबरी भक्ति

शकुन्तला पालीवाल
उदयपुर, भारत

867. राम पधारे
शबरी के आश्रम
बन अतिथि

868. सिर नवाती
चरण कमलों में
प्रेम में मग्न

869. चरण धोये
आसन हैं विराजे
राम लखन

870. रसीले फल
कन्द मूल प्रभु को
किये अर्पित

871. प्रेम सहित
खाये प्रभु ने फल
धन्य शबरी

872. हाथ जोड़ती
बहती अश्रुधारा
प्रेम विह्वल

873. कहे शबरी
स्तुति करूँ मैं कैसे
हूँ अल्प बुद्धि

874. बोले राघव
बात सुनो भामिनी
मैं भक्ति प्रिय

875. नवधा भक्ति
तुम हो अधिकारी
श्रमणा सुनो

876. भक्त सरल
कपट रहित हो
रखे विश्वास

877. संत सत्संग
मेरी कथा में जाप
प्रेम मंत्र का

878. नवधा भक्ति
तुम में समाहित
पूर्ण हो तुम

879. करे शबरी
बारंबार प्रणाम
बहते अश्रु

880. मुख दर्शन
किये प्रभु के तब
नवाया शीश

881. देह से मुक्त
दुर्लभ हरिपद
शबरी लीन

नवधा भक्ति

रामकृपाल 'कृपाल'
जालौन, भारत

882. राम लक्ष्मण
शबरी घर आए
शबरी मग्न

883. प्रेम सहित
शबरी ने सहर्ष
पद पखारे

884. अर्पित फल
प्रेम सहित प्रभु
भोग लगाए

885. अधम जाति
शबरी अति भोली
प्रभु से बोली

886. कैसे विनती
प्रभु करूँ तुम्हारी
हे धनुर्धारी!

887. राघव बोले
भामिनी मानूँ बस
भक्ति का नाता

888. भगति बिना
नर बिन जल के
बादल जैसा

889. नवधाभक्ति
कहता विधान से
सुनो ध्यान से

890. प्रथम भक्ति
संतजन का संग
देता आनंद

891. भक्ति दूसरी
लगे सुरुचिपूर्ण
कथा प्रसंग

892. तीसरी भक्ति
अभिमान रहित
गुरु की सेवा

893. चतुर्थ भक्ति
कपट त्याग मम
हो गुणगान

894. भक्ति पाँचवीं
मम दृढ़ विश्वास
मंत्र का जाप

895. छठवीं भक्ति
इंद्रियों का संयम
तथा वैराग्य

896. भक्ति सातवीं
जग में समभाव
संत सम्मान

897. भक्ति आठवीं
यथालाभ संतोष
न परदोष

898. नवम भक्ति
निष्कपट बर्ताव
मम विश्वास

899. इन नौ में से
जिनके एक भी हो
वो मम प्रिय

900. फिर तुझमें
सब प्रकार दृढ़
भक्ति प्रत्येक

901. पायी तुमने
कर मेरा दर्शन
दुर्लभ गति

हनुमान-सीता भेंट

नीना छिब्बर
जोधपुर, भारत

902. राम सेवक
मन में धर ध्यान
पहुँचे लंका

903. अंजनी सुत
जानकी दर्शनार्थ
युक्ति लगाई

904. सिया उदास
राम नाम में लीन
वक्त बिताती

905. ये रामकथा
पावन सुन माता
है सुखकारी

906. हर्षित मन
देख राम मुद्रिका
मन भ्रमित

907. रामदूत मैं
प्रभु संदेश लाया
आनंद छाया

908. दुर्दिन काल
वीर तुम सहाय
प्रभु न आये

909. आयेंगे शीघ्र
होगा दुष्ट विनाश
रखेंगे लाज

910. मन में शंका
वानर सब लघु
दानव क्रूर

911. पवनपुत्र
धर विशाल रूप
शंका मिटाई

912. हे दशानन!
छोड़ दे अभिमान
क्षमा ले माँग

913. लूम लपेट
जलाकर नगरी
किया विनाश

914. पवनसुत
बोले विनम्र वाणी
आज्ञा दो माता

915. दुख हरण
आएंगे रघुनाथ
हुआ विश्वास

हनुमान का लंका गमन

शालिनी गर्ग

दोहा, क़तर

916. सीता खोजने
निकले हनुमान
वानर संग

917. सागर पार
कौन जाये वानर
सब लाचार

918. हे हनुमान!
बोले श्री जामवंत
तुम हो योग्य

919. लाँघा सागर
लेकर प्रभु नाम
जय श्रीराम

920. सुरसा हारी
निशचरी भी मारी
लंका की बारी

921. सोने की लंका
समुन्दर से घिरी
असुरों भरी

922. मसक रूप
किया लंका प्रवेश
मारी लंकिनी

923. खोजे महल
एक-एक करके
सिया न पायी

924. भवन मिला
रामनाम था लिखा
विभीषण का

925. ब्राह्मण बन
विभीषण से मिले
हृदय खिले

926. बताया पता
अशोक वाटिका में
जानकी माता

927. देखी वैदेही
राम नाम जपती
दुर्बल काया

928. रावण आया
सीता को ललचाया
बन जा रानी

929. अधम पापी
रामचंद्र हैं सूर्य
तू है जुगनू

930. भर हुंकार
निकाली तलवार
तप्त रावण

931. रखो धीरज
बोली मयतनया
यही है नीति

932. त्रिजटा आयी
शुभ सपना लायी
सिया को भायी

933. कपि आयेगा
दुख दूर करेगा
जला के लंका

934. प्राण त्याग दूँ
ये सोचकर सीता
होती हताश

935. वृक्ष के पीछे
रोये पवनसुत
देख-देख के!

सीता-हनुमान संवाद

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
बाँसवाड़ा, भारत

936. व्यथित मन
अशोक वाटिका में
जनकसुता

937. पहरे खड़ी
राक्षसियाँ दिखातीं
रावण भय

938. विरही सीता
अशोक विटप से
आग माँगती

939. हनुमत ने
राम-नाम अंकित
मुद्रिका डाली

940. देख मुद्रिका
हुई चकित सीता
लगे राम की!

941. सोचे जानकी
कहीं छल तो नहीं
क्या है राम की?

942. पवनसुत
गाने लगे महिमा
रामचंद्र की

943. सुनने लगी
पूर्ण मनोयोग से
माता जानकी

944. कह सुनाई
आदि से अब तक
श्री राम कथा

945. कहाँ हो भाई
अमृत-सी मधुर
कथा सुनाई

946. पवनपुत्र
निकट गए तब
किया प्रणाम

947. मैं राम दूत
नाम है हनुमान
भेजा प्रभु ने

948. निशानी रूप
श्री राम ने ही दी है
यह मुद्रिका

949. सुन वचन
सीता मन विश्वास
है राम दास

950. वैदेही बोली
मेरी पीर हर ली
हे हनुमान!

951. बताओ तात!
अभागन को प्रभु
करते याद?

952. दिवस-रात
आपका ही स्मरण
करते राम

953. धैर्य धरिये
पाकर समाचार
आयेंगे राम

954. होगा संग्राम
दशानन का नाश
करेंगे राम

955. मुक्त करेंगे
अशोक वाटिका से
प्रभु श्री राम

लंका दहन

अनिता कपूर
हेवर्ड, यू.एस.ए.

956. सीता हरण
व्यथित राम-मन
हँसा रावण

957. अशोक वन
सीता करे रुदन
कहाँ हैं राम

958. लंका पधारे
हनुमत हमारे
खोजने सीता

959. सीता को पाया
अशोक वाटिका में
ले राम नाम

960. कर प्रणाम
सीता को दी मुद्रिका
हनुमान ने

961. खोज वैदेही
वाटिका को उजाड़ा
हनुमान ने

962. पावक लगी
हनुमत पूँछ में
जला दी लंका

963. देखे रावण
लंका का सर्वनाश
बीस आँखों से

964. पवनपुत्र
कर खोज सीता की
लौटे किष्किन्धा

965. गले लगाया
प्रभु ने हनुमान
जय श्री राम

मन्दोदरी-रावण संवाद

चित्रा गुप्ता
सिंगापुर

966. दत्तक पुत्री
ऋषि मायासुर की
थी मन्दोदरी

967. अप्सरा कन्या
अनुपम सुन्दरी
थी मन्दोदरी

968. तुच्छ मेंढकी
बनी थी मन्दोदरी
विष पीकर

969. कुंडली दोष
मन्दोदरी निर्दोष
दुखी जीवन

970. पिता थे लोभी
देख लंकेश राज्य
ब्याह दी पुत्री

971. सीता हरण
अत्यंत निंदनीय
पति का कृत्य

972. सीता है सती
कहती मन्दोदरी
दशानन को

973. हे भ्रष्टाचारी!
टपकाओ न लार
'परस्त्री' पर

974. बात न माने
विनाशपथ पर
चला रावण

975. सीता की रक्षा
करती मन्दोदरी
लंकेश्वर से

976. पति उन्मादी
विडम्बना है भारी
लज्जित नारी

977. लंका की रानी
मंदोदरी थी ज्ञानी
न अहंकारी

सीता परित्याग

सुरंगमा यादव
लखनऊ, भारत

978. रजक वाणी
पल में परित्यक्ता
जगकल्याणी

979. अग्निपरीक्षा
कर न सकी रक्षा
जग व्यंग्यों से

980. सुनो लखन!
सिया को पहुँचा दो
वन तत्क्षण

981. सुन वचन
हतप्रभ लक्ष्मण!
शोक मगन

982. राम ने जाना
राजधर्म का मर्म
सिया से बड़ा

983. आहुति दे दी
सूर्यवंश के लिए
सिया प्रिया की

984. सिया के सँग
सारे ही सुख-रंग
राम ने त्यागे

985. जा रही वन
सिया कोख में लिए
राम-रतन

986. विलखे सीता
हुआ क्या अपराध?
सोचे पुनीता

987. विलापे सिया
वाल्मीकि ने आकर
धीरज दिया

988. मायका नया
वाल्मीकि का आश्रम
सिया को मिला

989. राम सावधि
सीता तो निरवधि
वन को गयी

990. सीता की कथा
हरण व परीक्षा
औ' भू समाधि

रामायण में गिनती

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

991. एक से दस
गिनती का उल्लेख
रामकथा में

992. राम हैं एक
पर नाम अनेक
वंदन करूँ

993. राम व सीता
दो होकर भी एक
इष्ट हमारे

994. तीन हैं माता
कैकेयी व सुमित्रा
कोसलसुता

995. चार हैं भाई
भरत व लक्ष्मण
राम, शत्रुघ्न

996. पाँच हैं वृक्ष
पावन पंचवटी
राम निवास

997. छः मुखवाले
अग्रज कार्तिकेय
गणपति के

998. सात हैं ऋषि
वशिष्ठ, विश्वामित्र
अत्रि, गौतम

999. जमदग्नि जी
कश्यप, भरद्वाज
करूँ प्रणाम

1000. आठ सिद्धियाँ
दाता पवनसुत
जाने उनको

1001. एक अणिमा
महिमा व गरिमा
लघिमा चौथी

1002. पंचम प्राप्ति
प्राकाम्य व ईशित्व
अंत वशित्व

1003. नौ हैं निधियाँ
देते अंजनिपुत्र
उनको सीखें

1004. प्रथम पद्म
महापद्म व नील
चौथी मुकुंद

1005. पाँचवी नन्द
मकर व कच्छप
शंख व खर्व

1006. दस दिशायें
उत्तर व दक्षिण
पूर्व, पश्चिम

1007. फिर ईशान
नैर्ऋत्य व वायव्य
फिर आग्नेय

1008. दो रहीं शेष
आकाश व पाताल
गिनती पूरी!

कवि सूची

अंजलि तिवारी मिश्रा	2	गंगा पांडेय 'भावुक'	10
अनिता कपूर	61	गोपेश वाजपेयी	10
अनुज मेरठी	2		
अन्नपूर्णा श्रीवास्तव	2	चंद्रिका दर्जी	10
अमित शाह	2	चन्द्रकान्त पाराशर	10
अम्बे कुमारी	2	चित्रा गुप्ता	10, 62
अरविंद भगानिया	2	जगदीश व्योम	11
अरविन्द कुरील	3	डी. पी. सिनालि नदीपमा पतिरण	11
अरुण प्रदीप शर्मा	3		
अर्चना प्रकाश	42, 46		
अलंकार आच्छा	3	तारा प्रजापत 'प्रीत'	11
अलका प्रमोद	3, 49	तारिका सिंह	12
अलका	4	तुकाराम पुंडलिक खिल्लारे	12
आभा खरे	4	तृप्ति गोस्वामी 'काव्यांशी'	12
आर. पी. शुक्ल	5	दिव्या शर्मा	53
आरती ‘लोकेश’	5	दीप्ति अग्रवाल	13
आलोक मिश्रा	5	दीप्ति गौड़ 'दीप'	13
आशा मोर	6	दीप्ति मिश्रा	13
		दुर्गा अशोक सिन्हा	13
इन्दु गुप्ता	6	नमिता सिंह 'आराधना'	14
इन्दुकांत आंगिरस	6	निर्मल जैन 'नीर'	14
उषा गौड़	7	निर्मला सिंह	14
उषा श्रीवास्तव	7	निवेदिता सिन्हा	14
ओमप्रकाश गुप्ता	7, 64	निशा महाराणा	15
		निहाल चंद्र शिवहरे	15
कंचन लता पाण्डेय	8	नीना छिब्बर	40, 58
कमलेश भट्ट कमल	8	नीलम झा	15
काजरी गुहा	9	नीलम वर्मा	15, 45
काशी नाथ मिश्र	9	नीलम शर्मा	16
किशोर आर. टंडेल	9	नीलिमा तिग्गा	55
कैलाश गिरि गोस्वामी	9	नीलू गुप्ता	16

पिंगलेश कचौले 16
पीयूष चतुर्वेदी 17
पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु' 17
पुष्पा पालीवाल 17
पुष्पा मेहरा 18
पुष्पा सिंघी 18
पूजा लाल 18
पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा' 19
पृथ्वी सिंह बैनीवाल 19
प्रतिभा जोशी 19
प्रतिमा प्रधान 19
प्रेमलता माहेश्वरी 50
फूल चंद्र विश्वकर्मा 19
बृंदावन राय सरल 19
बृजबाला गुप्ता 'अर्चना' 20
भारती चौधरी 20
भावना कुँअर 20
मंजु महिमा 20
मंजु शर्मा जांगिड 'मनी' 21
मंजुला चतुर्वेदी 21
मंजू यादव 21
मधु खन्ना 21
मधु गोयल 21
मधु माहेश्वरी 21
मधु वैष्णव ‘मान्या’ 22
मनीष कुमार श्रीवास्तव 22
ममता उपाध्याय 22
ममता मिश्रा 22
माया बंसल 23, 44
मारुति ज. कृ. शर्मा 23
मालिनी त्रिवेदी पाठक 23
मीनाक्षी भाईलाल सोनी 24
मीरा ठाकुर 24
मीरा सिंह ‘मीरा’ 24
मुक्ता श्रीवास्तव 43
मोनिका कपूर 24
रंजना माथुर 24
रचना श्रीवास्तव 25
रश्मि वार्ष्णेय 39
राजश्री सुरेश राठी 25
राजेश कुमार मिश्रा 25
राम नेमा 'राज’ 26
राम सिंह 'साद' 26
रामकृपाल 'कृपाल' 57
रीता पाण्डेय 41, 51
रेखा नायर 26
रेखा शर्मा 26
रेणु चन्द्रा माथुर 38
रोहित कुमार मिश्रा 27
लता अग्रवाल ‘तुलजा’ 47
वनिता शर्मा 27
वसुमति चतुर्वेदी 27
विजय गिरि गोस्वामी 60
'काव्यदीप'
विद्या चौहान 27
विनीता मिश्रा 28, 52
विनोद वर्मा 'दुर्गेश' 28
विभा रश्मि 28
विभा रानी श्रीवास्तव 28
विभावरी उदय लेले 29
विष्णु शास्त्री 'सरल' 29
वीणा पाठक 54
वीना आडवाणी तन्वी 29
वीरेंद्र आज़म 29

शकुन्तला पालीवाल 56
शशि सक्सेना 29
शार्दुला नोगजा 29
शालिनी गर्ग 59
शिखा सक्सेना 30
शिवप्रकाश अग्रवाल 30
शिवेंद्र कुमार श्रीवास्तव 30
शैल अग्रवाल 30
श्याम बहादुर श्रीवास्तव 31

संगीता अग्रवाल 31
संतोष कुमारी ‘संप्रीति’ 32
संतोष भाऊवाला 32
संदीप पांडे 'शिष्य' 32
सरिता सुराणा 32
सरोज अग्रवाल 33
सावित्री शर्मा 'सवि' 33
सी. कामेश्वरी 33
सीमा जोशी मूथा 34
सीमा शर्मा 34
सुनीता गहलोट 34
सुनीता पाहूजा 34
सुनीता यादव 34
सुभाषिनी शर्मा 35
सुमन लता 35
सुरंगमा यादव 35, 63
सुरभि दत्त 36
सुषमा नैय्यर 48
सूर्य करण सोनी 'सरोज' 36
सोनम यादव 36
सोना अग्रवाल 36
स्वीटी सिंघल ‘सखी’ 37

विद्वानों के शब्द

'राम हाइकु पीयूष' हाइकु को राममय बनाने का अभिनव प्रयास है! इसमें 151 कवियों की रामकथा केन्द्रित मौलिक हाइकु कविताओं की भावांजलि है। इस पुस्तक के लिए ओम जी की राम के साथ प्रतिबद्धता तो श्लाघनीय है ही, यह उनकी अद्भुत संयोजन-क्षमता तथा उनके प्रबंधकीय कौशल का भी सुफल है। शुभकामनाओं सहित!
- कमलेश भट्ट कमल, भारत

पुन: एक बेमिसाल श्री राम चरित भवन, ह्यूस्टन, यू.एस.ए. द्वारा रामायण केन्द्रित वैश्विक संग्रह, अनूठी हाइकु विधा में! राम को तो यूँ भी समझने के लिए ढाई आखर ही काफी हैं!
- शार्दुला नोगजा, सिंगापुर

पूजा कई तरह से की जा सकती है पर हर पूजा में समर्पण और एकाग्रता का होना बहुत जरूरी है और इसी समर्पण, एकाग्रता व मेहनत का प्रतिफल है पुस्तक राम हायकू पीयूष। आशा है कर्मठता, शब्द चातुर्य व लावण्य से ओत-प्रोत इस पुस्तक का पाठक खुलकर स्वागत करेंगे।
- शैल अग्रवाल, यू. के.

कुछ माह पूर्व जब डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता ने मुझ से 'राम' पर केंद्रित हाइकु संकलन की बात की तो कुछ आश्चर्य सा हुआ था। मात्र एक विषय को ले कर बिना एकरसता के जाल में फँसे कैसे इतनी हाइकु कविताओं की रचना की जा सकती है? उस समय शायद मैंने 'राम' के चरित्र की विराटता का ठीक से अंदाज़ा नहीं लगाया था। अब इस संकलन को देखकर बड़ी प्रसन्नता हो रही हैं। सभी हाइकुकारों को बधाई और 'राम हाइकु पीयूष' की सफलता के लिए शुभकामनाएँ।
- अनूप भार्गव, संस्थापक-'हिंदी से प्यार है' समूह, प्रिंसटन, न्यू जर्सी, यू. एस. ए.

'हाइकु' कविता में राम पर छुटपुट हाइकु तो लिखे जाते रहे हैं परंतु इस तरह से योजनाबद्ध हाइकु लेखन इससे पूर्व कभी नहीं हुआ। हाइकु कविता के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है कि रामकथा पर, रामकथा के विविध प्रसंगों पर 11 देशों के 151 हाइकु रचनाकारों ने 1008 हाइकु लिखे हैं। कुल मिलाकर 'राम'और 'रामकथा' पर केंद्रित यह हाइकु संकलन अपनी तरह का दुनिया का पहला हाइकु संकलन है। इसके लिए डॉ० ओमप्रकाश गुप्ता एवं उनकी पूरी राममय टीम की जितनी प्रशंसा की जाए; कम ही होगी। संकलन में शामिल सभी हाइकु रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। मेरा सहज विश्वास है कि "राम हाइकु पीयूष" को देश-विदेश में भरपूर प्यार और सम्मान के साथ पढ़ा और सराहा जाएगा।
- डॉ० जगदीश व्योम, सम्पादक, हिन्दी हाइकु कोश, भारत

US $4.95
ISBN 978-1-7362088-5-4
9 781736 208854